A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 27 अक्टूबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-59 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

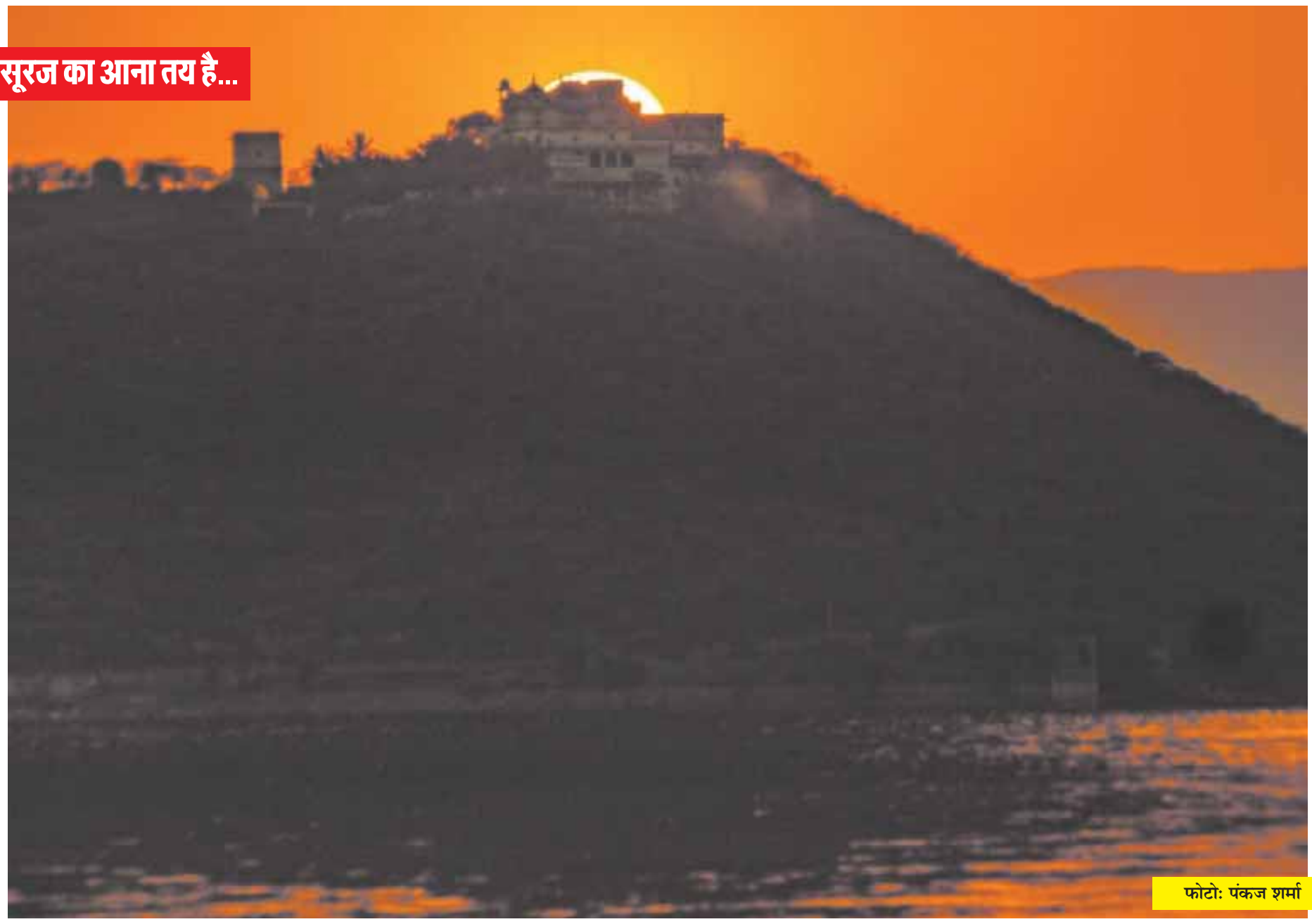

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

मायके जाते-आते
कहीं खो नहीं जाए
इस भय से पिता
आइलपेंट से टेढ़ मेढ़े अक्षरों में
संदूक पर छोड़ गए माँ का नाम
सभी कुछ बंट जाने के बाद
हम भाइयों की आजमाइश
उसी संदूक को लेकर थी
कई दिनों की मंसूबाबंदी
काम कर गई
उसका जंग लगा ताला
टूटने का दिन त्योहार था
गोटे किनारी की साड़ी
ब्लाउज से किसी को क्या लेना?
अति विनम्र स्नेहिल मुस्कान लिए
खिसियानी लेकिन खनकदार
हँसी में एक पोटली खुद
खुलने को बेसब्र थी
उसमें जतन से बंधी पायजेब
पाकर कोई धन्य नहीं हुआ
निराशा के अंधे कुएँ में हम
भाई छटपटाते रहे
हालाँकि सोने की नथ भी
बंधी मिली पुड़िया में
ठुस्सी, बिछिया, करध, झूमर
अंगूठी, मंगलसूत्र तक
गिरवी रखना पड़े
तुम लोगों की पढ़ाई-लिखाई
ब्याह-शादी के दिनों
डाकघर जाती, लेकिन
पोस्ट किए बिना
बहुत संकोच के साथ
लौट-लौट आती
निढ़ाल पगथलियां
माँ के संदूक में रखी
पिता की चिट्ठी में मिली
पल्लू पकड़कर मचलने रूठने
पैर पटकने की ढ़ेरों
गोद में लदी जिदें
संदूक में मिली
आँसुओं के समुंदर में डूबे
उस संदूक में माँ की आँखें मिली।

– नरेंद्र गौड़

हर जनप्रतिनिधि कम से कम दस महिलाओं को बनाएंगे सदस्य

● बीजेपी बनाएगी अब दो करोड़ सदस्य ● सीएम बोले-बेरोजगारों की सूची बनाएं- विधायक-सांसद, जिला अध्यक्ष

भोपाल (नप्र) । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के माध्यम से संभाग स्तर पर नए उद्योग लगने का मौका आने वाला है। इससे रोजगार सृजन होगा, इसलिए सांसद, विधायक, जिला पदाधिकारी अपने क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं की लिस्ट बनाएं, ताकि उन्हें रोजगार दिया जा सके। रीजनन इंडस्ट्री कांक्लेव 7 दिसंबर को नर्मदापुरम में होगी।

उन्होंने कहा कि हर लोकसभा क्षेत्र के लिए 120 करोड़ के कामों को मंजूरी सरकार दे रही है। हर विधानसभा क्षेत्र के लिए 15 करोड़ रुपए के काम कराए जा रहे हैं। इसलिए विधायक संगठन के साथ मिलकर कार्ययोजना तैयार कराएं। बीजेपी दफ्तर में संगठन पर्व को लेकर आयोजित कार्यशाला में इससे पहले सदस्यता अभियान में कमजोर परफार्मेंस वाले विधानसभा क्षेत्रों और जिलों की जानकारी संगठन की ओर से दी गई और सुधार के लिए कहा गया। इस दौरान प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने कहा कि अब सदस्यता अभियान में दो करोड़ सदस्य बनाना है।

बेरोजगारों की सूची बनाएं सांसद और विधायक

कार्यशाला में सीएम मोहन ने कहा कि प्रदेश में स्थापना दिवस कार्यक्रम 4 दिन तक चलेंगे, गोवर्धन पूजा धूमधाम से मनाने का निर्णय सरकार ने लिया है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार काम कर रही है। अभी देश में दूध उत्पादन में एमपी का प्रतिशत 9 है, जिसे 20 प्रतिशत तक ले जाने के लिए काम करना है। हम दूध पर बोनस देने वाले हैं। जो लोग 10 से ज्यादा गाय पालेंगे, उन्हें सरकार अनुदान देगी। उन्होंने कहा कि एक्सीडेंट में घायल होने वालों की जान बचाने के लिए सरकार ने तय किया है कि सूचना मिलते ही एंबुलेंस और एयर एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाएंगे। घायलों उपचार की पूरी सुविधा मिलनी चाहिए। अगर कोई आयुष्मान योजना के दायरे से बाहर है तो वह नॉमिनल राशि जमा कर देगा और बाकी उपचार सरकार कराएगी। मुख्यमंत्री ने सत्ता और संगठन के कामों को लेकर कई जानकारियां भी दीं।

पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत ग्रोइंग नेशन और मध्यप्रदेश फ्यूचर रेडी स्टेट बना : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत ग्रोइंग नेशन बनकर उभरा है और मध्यप्रदेश फ्यूचर रेडी स्टेट बनने की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है। भारत को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने का जो संकल्प प्रधानमंत्री श्री मोदी ने लिया है, उस संकल्प को पूरा करने में मध्यप्रदेश सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। इस दिशा में हमने एक नई पहल करतें हुए उज्जैन से रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव की शुरूआत की। प्रदेश में स्थानीय उद्यमियों को प्रोत्साहन देने और राज्य में बड़ी औद्योगिक इकाईयों की स्थापना के लिये प्रदेश और देश के बड़े उद्योगपतियों को आमंत्रित किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय खनन कॉन्क्लेव का होना प्रदेश के लिये सुखद अनुभूति रही। इस दो दिवसीय कॉन्क्लेव में विभिन्न 11 औद्योगिक संस्थानों की ओर से 19,650 करोड़ रूपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए जो अभूतपूर्व है।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि खनिज एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें अपार आर्थिक संभावनाएँ हैं। खनिज क्षेत्र में रोजगार उत्पन्न करने और देश की इकोनॉमी को तेजी से ऐक्सेलरेट करने की क्षमता भी है। खनिज क्षेत्र में आत्मनिर्भर कर हम विदेशी मुद्रा की भी बड़ी बचत कर सकते हैं। वैश्विक अस्थिरता के दौर में खनन क्षेत्र में बहुत बड़ी ताकत होगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश में खनिज क्षेत्र में नई क्रांति आई है। भोपाल में हुई खनन कॉन्क्लेव में खनिज अन्वेषण को गति देना, खनिज प्र-संस्करण, नवीन तकनीकों का उपयोग और पर्यावरण सुरक्षा जैसे विषय पर हुए वैचारिक मंथन से निकला अमृत खनन क्षेत्र में जरूरी नीतिगत सुधारों की पहचान करने और उन्हें लागू करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मध्यप्रदेश में देश की खनिज कैपिटल बनने का भरपूर पोटेंशियल है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश देश के प्रमुख खनिज राज्यों में से एक है। देश की कुल खदानों में हमारी भागीदारी 20 प्रतिशत है। प्रदेश मैंगनीज तथा तांबा अयस्क के उत्पादन में देश में प्रथम, रॉक फॉस्फेट के उत्पादन में द्वितीय, चूना पत्थर के उत्पादन में तीसरे एवं कोयला उत्पादन में चौथा स्थान पर हैं। प्रदेश में मलाज़खण्ड की तांबे की खदान भारत की सबसे बड़ी तांबा खदान है। यहाँ से प्रतिदिन 5 से 10 हजार टन तांबा निकाला जाता है।

इजराइल का 'बम' वार

ईरान का आसमान किया धुआं-धुआं

तेहरान/तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल ने ईरान के हमलों के जवाब में 25 दिन बाद शनिवार तड़के पलटवार किया। न्यूयॉर्कटाइम्स के मुताबिक 3 घंटे में 20 ठिकानों पर हमले किए गए। इनमें मिसाइल फैक्ट्री और सैन्य अड्डे शामिल हैं। तेहरान के इमाम खुमैनी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास भी हमला हुआ है।

हमले स्थानीय समयानुसार देर रात 2.15 बजे शुरू हुए और तड़के 5 बजे तक जारी रहे। यरुशलम पोस्ट के मुताबिक इजराइल ने ईरान पर हमला करने के लिए 100 से ज्यादा फाइटर जेट्स का इस्तेमाल किया। हमले में एफ-35 का भी इस्तेमाल किया गया। सीरिया में रडार ठिकानों पर इजराइल ने शुरुआती हमला किया। इसके बाद ईरान में एयर डिफेंस सिस्टम और रडार पर हमला किया गया।

● 100 मिसाइलों से बोला भीषण हमला, 20 ठिकाने कर दिए हैं तबाह ● दो सैनिकों की मौत, मिसाइल फैक्ट्रियों-सैन्य अड्डे को बनाया निशाना

इजराइल डिफेंस फोर्स ने रात में 2.30 बजे इसकी जानकारी दी। आईडीएफ के प्रवक्ता डेनियल हगारी ने कहा- 1 अक्टूबर को इजराइल पर हुए हमले के जवाब में यह कार्रवाई की गई है। ईरान और मिडिल ईस्ट में उसके सहयोगी 7 अक्टूबर 2023 से 7 मोर्चों पर हम पर हमले कर रहे हैं। हमें भी जवाब देने का हक है। अपनी रक्षा के लिए जो भी जरूरी होगा वह करेंगे।

ट्रेन से युवक-युवती ने नदी में लगाई छलांग

प्रेम-प्रसंग में सुसाइड की आशंका; युवक की लाश ब्रिज पर, युवती की नदी में मिली

छतरपुर(नप्र) । छतरपुर में युवक-युवती ने चलती ट्रेन से नदी में छलांग लगा दी। जिससे दोनों की मौत हो गई। युवक का शव रेलवे ब्रिज पर फंसा हुआ मिला। जबकि युवती का शव नदी में मिला। इस मामले में प्रेम प्रसंग में खुदकुशी की आशंका जताई जा रही है। घटना शनिवार दोपहर करीब 12 बजे हरपालपुर रेलवे स्टेशन के पास की है। यहां से करीब 12 बजे हावड़ा-चंबल एक्सप्रेस ट्रेन निकली थी। जानकारी के मुताबिक ट्रेन में एक युवक-युवती भी सफर कर रहे थे। ट्रेन जब चपरन गांव के पास धसान नदी पर बने ब्रिज से गुजरी, तभी दोनों चलती ट्रेन से ही नदी में कूद गए।

ग्रामीणों ने लाश देखी तो पुलिस को सूचना दी- दोपहर में जब गांव के लोग यहां से निकले तो युवक का शव रेलवे ब्रिज पर पड़ा देखा। वहीं, युवती की लाश पानी में नजर आई। जिसकी जानकारी हरपालपुर थाना पुलिस को दी गई।

युवक यूपी के झांसी का, युवती की पहचान नहीं: मृतक युवक की पहचान संजीव अहिरवार (उम्र 20 वर्ष) पिता परशुराम अहिरवार के रूप में की गई है। वह यूपी के झांसी जिले के मऊरानीपुर थाने के झाकरी गांव का रहने वाला था। वहीं, युवती की अब तक पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस की शुरुआती जांच में आशंका जताई जा रही है कि दोनों ने प्रेम प्रसंग के चलते सुसाइड किया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 27 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

क्रिप्टोकरेंसी फाइनेंशियल स्टेबिलिटी के लिए बहुत बड़ा जोखिम

मुंबई (एजेंसी)। क्रिप्टोकरेंसी फाइनेंशियल स्टेबिलिटी और मॉनेटरी स्टेबिलिटी के लिए बहुत बड़ा जोखिम है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर शक्तिकांत दास ने शुक्रवार को पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स में आयोजित एक कार्यक्रम में यह बात कही।

उन्होंने कहा – मैं वास्तव में इस राय का हूं कि यह ऐसी चीज है जिसे फाइनेंशियल सिस्टम पर हावी होने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यह बैंकिंग प्रणाली के लिए भी जोखिम पैदा करता है। यह ऐसी स्थिति भी पैदा कर सकता है जहां केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति से नियंत्रण खो सकता है। यदि केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति से नियंत्रण खो दे तो बैंकिंग सिस्टम में उपलब्ध लिक्विडिटी की जांच कैसे करेगा।

दिल्ली में स्कूल के बाहर आतंकी पन्नू ने लिखवाए नारे

अमृतसर (एजेंसी)। खालिस्तान समर्थक संगठन सिख फॉर जस्टिस ने दिल्ली के व्हाइट लीफ पब्लिक स्कूल में प्रधानमंत्री मोदी और कनाडा के पूर्व उच्चायुक्त संजय वर्मा के खिलाफ नारे लिखे हैं। आतंकी पन्नू ने एक वीडियो जारी कर कहा कि नारे उसने लिखवाए हैं। इसमें पीएम और वर्मा को हिंदू

आतंकवादी कहा है। आतंकी पन्नू का यह रिएक्शन वर्मा के एक न्यूज एजेंसी को दिए इंटरव्यू के बाद आया है। जिसमें वर्मा ने कहा था कि कनाडा ने भारत को धोखा दिया। कनाडा की राजनीति में खालिस्तानी आतंकियों का असर है। निज्जर की हत्या के आरोप भी राजनीति से प्रेरित हैं। पन्नू ने वीडियो में वर्मा को चेतावनी भी दी है। वह खालिस्तान समर्थकों की निगरानी में हैं।

भाजपा ने महाराष्ट्र के लिए जारी की स्टार कैंपेनर्स की लिस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा ने महाराष्ट्र चुनाव के लिए स्टार कैंपेनर्स की लिस्ट जारी कर दी है। इस लिस्ट में कई बड़े नाम शामिल हैं। इन नामों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, अमित शाह जैसे दिग्गज नेताओं

के नाम शामिल हैं। राज्य की 288 सदस्यीय विधानसभा के लिए मतदान 20 नवंबर को होगा और मतगणना 23 नवंबर को होगी। भाजपा की स्टार लिस्ट में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, शिवराज सिंह चौहान, असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सिंह के नाम भी शामिल हैं। भाजपा के स्टार प्रचारकों की लिस्ट में 40 नाम शामिल हैं।

'बटेंगे तो कटेंगे' सीएम योगी के बयान को संघ का समर्थन

मथुरा में दत्तात्रेय बोले-बहुत जल्द सुलझेगा मथुरा का मामला

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उस बयान का आरएसएस ने समर्थन किया है। जिसमें सीएम योगी ने एक जनसभा के दौरान कहा था कि बटेंगे तो कटेंगे। योगी के इस बयान के बाद विपक्षी दलों ने आलोचना की थी। हालांकि, अब योगी के इस बयान का आरएसएस ने समर्थन किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने कहा कि बयान का मतलब एकता लाना जरूरी है। हिंदू एकता लोक कल्याण के लिए आवश्यक है। हिंदू को तोड़ने के लिए लोग काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें इसे आचरण में लाना होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने मथुरा मामले पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि मथुरा का मामला अब न्यायालय में है और हमें उम्मीद है कि न्यायालय इसे जल्दी सुलझाएगा। जिस तरह अयोध्या मामले का निपटारा हुआ, हर मामले को उसी तरह से सुलझाना जरूरी नहीं हैज्हमें न्यायपालिका पर भरोसा रखना चाहिए, यह मुद्दा अभी भी चल रहा है और लोग अपनी आवाज उठा रहे हैं। अगस्त में आगरा में बोलते हुए आदित्यनाथ ने बांग्लादेश में अशांति का जिक्र करते हुए राष्ट्रीय एकता के महत्व पर जोर दिया था। उन्होंने कहा था कि बटेंगे तो कटेंगेज्एक रहेंगे तो नेक रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा था कि राष्ट्र से बड़ा कुछ नहीं है। हमारी ताकत हमारी एकता में निहित है।

एमईआईएल का यंग इंडिया स्किल यूनिवर्सिटी को 200 करोड़ का योगदान

हैदराबाद। मौजूदा दौर में रोजगार के लिए पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ कौशल विकास भी बेहद जरूरी है। इस लिये तेलंगाना सरकार ने यंग इंडिया स्किल यूनिवर्सिटी स्थापीत करके बड़ा कदम उठाया है । यह योजना मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (एमईआईएल) की सामाजिक जिम्मेदारी शाखा एमईआईएल फाउंडेशन के तहत कार्यान्वित की जा रही है। एमईआईएल फाउंडेशन हैदराबाद में यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी की स्थापना के लिए 200 करोड़ रुपये का योगदान देगा। तेलंगाना सरकार के साथ साझेदारी में विकसित यह विश्वविद्यालय युवाओं को कौशल और उद्यमिता में उन्नत प्रशिक्षण प्रदान करेगा। आज इस समझोते पर हस्ताक्षर किये गये। इस समय मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और

एमईआईएल के प्रबंध निदेशक कृष्णा रेड्डी उपस्थित थे। विश्वविद्यालय हैदराबाद के पास मीर खान पेटा में 57 एकड़ की विशाल जगह पर बनाया जा रहा है। वाईआईएसयू परिसर में प्रमुख सुविधाओं में शैक्षणिक, प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय और कंप्यूटर कार्यशाला, प्रयोगशालाएं, छात्र और प्रोफेसर निवास, गेस्ट हाउस और वीसी, रजिस्ट्रार निवास, 700 क्षमता वाला सभागार और सम्मेलन कक्ष आदि शामिल हैं।

संघ प्रचारक का वर्ग 31 से ग्वालियर में

भोपाल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत प्रचारक बन्धुओं का वर्ग 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2024 तक, शुभ दीपावली पर्व पर ग्वालियर, मध्यप्रदेश में आयोजित हो रहा है। इस वर्ग में देश भर से 31 विविध संगठन के कुल 554 प्रचारक सहभागी होनेवाले है। इस वर्ग का स्वरूप प्रशिक्षणात्मक रहेगा। संघ के अ.भा. प्रचार प्रमुख सुनील आंबेडकर ने बताया कि यह अखिल भारतीय वर्ग प्रति 4-5 वर्ष में एक बार आयोजित होता है। वर्ग में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत , एवं सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले सहित संघ के सभी सहसरकार्यवाह तथा अन्य प्रमुख पदाधिकारी सहभागी होंगे। वर्ग में अपेक्षित यह सभी कार्यकर्ता समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीयता के भाव से समाज हित में सक्रिय रहते हैं।यह मज़दूर, किसानों, विद्यार्थियों तथा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं ग्रामीण, वनवासी , शहरी क्षेत्र में कार्य पर चर्चा करेंगे ।

इस वर्ग में व्यक्तिगत कुशलक्षेम, व्यक्तिगत विकास, स्वाध्याय के साथ समाज जीवन के लिये आवश्यक कार्यों की चर्चा एवं परस्पर अनुभव साझा किये जाते हैं। सभी अपने-अपने कार्य व अनुभवों का आदान-प्रदान करते हुए विस्तार से चर्चा करते हैं। राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्यों से जुड़े मुद्दों दिव्यांगजनों , युवा एवं महिला सशक्तीकरण , स्वावलम्बन, सुरक्षा, जैविक कृषि, जल संधारण, पर्यावरण संरक्षण, घुमन्तु कार्य, व्यसन मुक्ति जैसे अन्यान्य विषयों पर निरंतर सक्रिय ये सभी कार्यकर्ता इस वर्ग में मंथन करेंगे।

एक हुए बृजभूषण सिंह और बबीता फोगाट के सुर

एक ने बजरंग तो एक ने साक्षी मलिक के पति को ठहराया 'दोषी'

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के कुछ युवा रेसलर शुक्रवार को खेल मंत्री मनसुख मांडविया के घर के बाहर पहुंचे थे। इन खिलाड़ियों की मांग थी कि वह वर्ल्ड चैंपियनशिप में हिस्सा लेना चाहते हैं जिससे रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया ने नाम वापस ले लिया था। खेल मंत्रालय ने खिलाड़ियों को भेजने का फैसला किया। इसके बाद रेसलर बबीता फोगाट और फेडरेशन के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण सिंह ने इसे साजिश का नाम दिया है। फेडरेशन के चैंपियनशिप से हटने के फैसले के बाद बजरंग पूनिया ने गंभीर आरोप लगाया था। खेल मंत्रालय के हस्तक्षेप के बाद बबीता ने फोगाट ने ट्वीट किया और बजरंग को ही इसका कारण बता दिया। बबीता ने एक्स पर लिखा, '28 अक्टूबर से शुरू होने वाली विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में खेल मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा भारतीय टीम को विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में भेजने का फैसला अत्यंत सुखदाई है। कुश्ती जैसे पवित्र खेल जो हरियाणा की शान है और देश की जान है को कुछ लोगों ने उसकी गरिमा को धूमिल किया।

ज्ञानवापी के पूरे परिसर का अभी नहीं होगा सर्वे

- कोर्ट ने हिंदू पक्ष की याचिका की खारिज, वकील बोले-हाईकोर्ट जाएंगे

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी में ज्ञानवापी के पूरे परिसर का सर्वे नहीं होगा। फास्ट ट्रैक कोर्ट ने शुक्रवार को इससे जुड़ी हिंदू पक्ष की याचिका खारिज कर दी। हिंदू पक्ष ने दावा किया था कि मुख्य गुंबद के नीचे 100 फीट

का शिवलिंग मौजूद है। ऐसे में पूरे परिसर की खुदाई कराकर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से सर्वे कराया जाए। हिंदू पक्ष के वकील जय शंकर रस्तोगी ने बताया कि हम इस मामले को लेकर अब हाईकोर्ट जाएंगे। एक अन्य वकील मदन मोहन ने बताया, वजू खाना और एएसआई सर्वे कराने की मांग पहले से ही हाईकोर्ट में लंबित है। उसके विरोधाभास में जिला कोर्ट कोई आदेश नहीं दे सकती थी। शायद इस वजह से यह याचिका खारिज कर दी गई है। फास्ट ट्रैक कोर्ट ने 1991 में दायर याचिका पर फैसला सुनाया। इसे 33 साल पहले स्वयंभू ज्योतिर्लिंग की ओर से पं. सोमनाथ व्यास, डॉ. रामरंग शर्मा और पं. हरिहर नाथ पांडेय ने पूरे परिसर की एएसआई सर्वे की मांग उठाई थी। हालांकि, तीनों की मौत हो चुकी है। अब वादी वादमित्र विजय शंकर रस्तोगी हैं। पूरे परिसर के सर्वे मांग वाली याचिका पर 8 महीने से फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई चली। इस दौरान मुस्लिम पक्ष के वकीलों ने दलील दी थी कि जब ज्ञानवापी परिसर का एएसआई सर्वेक्षण एक बार पहले हो चुका है, तो दूसरा सर्वेक्षण करने का कोई औचित्य नहीं है।

पंजाब के 4 हाईवे अनिश्चितकाल के लिए हुए बंद

किसान बोले-

लिफ्टिंग शुरू होने तक नहीं खुलेंगे रास्ते, इमरजेंसी सेवाएं रहेंगी जारी

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब में धान की लिफ्टिंग ना होने से खफा किसानों ने शनिवार को राज्य के 4 हाईवे बंद कर दिए हैं। किसान 1 बजे सड़कों पर बैठ गए। ये प्रदर्शन तब तक जारी रहेगी, जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं हो जाती। उनका कहना है कि केंद्र और राज्य सरकारें दोनों ही उनकी मांगों की तरफ

ध्यान नहीं दे रहीं। किसान मजदूर मोर्चा और किसान संयुक्त मोर्चा नॉन (पॉलिटिकल) जॉइंट फोरम के नेता सरवन सिंह पंधेर ने बताया कि आज 1 बजे के बाद से पंजाब के 4 हाईवे जाम किए गए हैं। 1 बजे के बाद आवाजाही को बंद कर दिया गया। पंधेर ने कहा कि फूड सप्लाई मंत्री के साथ शैलरों की बैठक हुई थी। शैलरों की मांग थी कि धान में से कम चावल निकलता है और उन्हें 2-3 किलो की अधिक छूट दी जाए।

साइक्लोन 'दाना' से पश्चिम बंगाल में 4 लोगों की मौत

ओडिशा में 1.75 लाख एकड़ में फसल हुई बर्बाद

भुवनेश्वर (एजेंसी)। मौसम विभाग (आईएमडी) के मुताबिक बंगाल की खाड़ी से उठा साइक्लोन 'दाना' शनिवार रात तक पूरी तरह बेअसर हो जाएगा। तूफान के चलते पश्चिम बंगाल के पूर्वी बर्धमान, दक्षिण 24 परगना, कोलकाता और हावड़ा में 4 लोगों की मौत हो गई है। ओडिशा में किसी की जान नहीं गई, लेकिन बारिश और तूफान से 1.75 लाख हेक्टेयर इलाके में फसल बर्बाद हो गई है। ओडिशा के सीएम मोहन चरण मांझी ने बताया कि तूफान से पहले 8 लाख लोगों को रेस्क्यू कर लिया गया था। दाना का असर आंध्र प्रदेश, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ और तमिलनाडु में भी

पड़ा। बिहार और झारखंड में बारिश जारी है। झारखंड में तापमान 6 डिग्री गिर गया है। अगले 24 घंटे तक बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ में बारिश का अनुमान है। पेड़-बिजली के खंभे उखड़े, बिहार-झारखंड में भी बारिश ओडिशा में सबसे ज्यादा नुकसान केंद्रपाड़ा, भद्रक और बालासोर जिलों में हुआ है। तेज हवा से कई पेड़ उखड़ गए। बिजली के खंभे टूट गए हैं। इससे कई इलाकों में बिजली गुल हो गई। तूफान के चलते नजदीकी राज्यों झारखंड, बिहार में भी बारिश हो रही है।

कुम्हार बस्ती के बाद अब राहुल गांधी पहुंचे सैलून

- कांग्रेस नेता ने वीडियो शेयर कर लिखा-कुछ नहीं बचता है
- ये शब्द आज देश के हर गरीब-मिडिल क्लास की कहानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी ने शुक्रवार को एक्स पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वे दिल्ली के एक सैलून पर पहुंचे। वे यहां शेविंग करवाते नजर आ रहे हैं। वीडियो के साथ राहुल ने लिखा- कुछ नहीं बचता है आज के भारत के हर मेहनतकश गरीब और मध्यम वर्ग के व्यक्ति की कहानी बयां करते हैं। यह सैलून अजीत चलाते हैं। उन्होंने राहुल को बताया कि कैसे वे

दिनभर काम करते हैं ताकि दिन के आखिर में कुछ पैसे बचा सकें। अजीत ने यह भी कहा कि राहुल से अपनी कहानी बताने के बाद उन्हें खुशी और संतुष्टि महसूस हुई। अजीत ने राहुल से कहा- कांग्रेस के राज में सुकून था अजीत राहुल से कह रहे हैं- पहले सोचा था आगे भविष्य हमारा अच्छा होगा, लेकिन यहीं के यहीं रह गए।

वायनाड की जनता को प्रियंका गांधी ने लिखा भावुक पत्र

वायनाड़ (एजेंसी)। वायनाड लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने प्रियंका गांधी को उम्मीदवार बनाया है। प्रियंका ने नामांकन दाखिल कर दिया है और अब उन्होंने वायनाड की जनता के नाम पत्र लिखा है।

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने जनता के प्रति अपनी प्रशंसा और प्रतिबद्धता व्यक्त की है। चूरामला और मुंडक्कई की अपनी यात्रा पर विचार करते हुए उन्होंने भूस्खलन के विनाशकारी प्रभाव और त्रासदी के सामने लोगों द्वारा बांटे गए अनुभव भी शेयर किए।

मुआवजे के लिए पीड़ितों ने किया है क्लेम ट्रिब्यूनल का रुख

ज्यादा मुआवजा चाहते हैं बालासोर रेल हादसे के 'पीड़ित'

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले साल जून 2023 में ओडिशा के बालासोर में एक भयानक रेल हादसा हुआ था। इस रेल हादसे में 297 लोग मारे गए थे और 800 से अधिक लोग घायल हुए थे। हालांकि पीड़ितों के परिजन अभी भी मुआवजे के लिए परेशान हैं। सैकड़ो पीड़ितों ने रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल का रुख किया है। रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल के सामने अधिक मुआवजे के लिए 841 याचिकाएं दायर की गई है। रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल में पीड़ित परिजन अधिक मुआवजे के लिए याचिका दायर करते हैं। परिवारों का प्रतिनिधित्व वकीलों द्वारा किया जाता है। रिकॉर्ड को पढ़ा और इसमें पता चला कि मुआवजे के लिए अधिकतम राशि

215 लोगों के मामलों में रेलवे ने मांगा 'उपस्थिति' का सबूत

पश्चिम बंगाल के निवासी को दी गई। इस हादसे में उसके लेफ्ट हैंड की कलाई जल गई थी और उसका दाहिना हाथ फैक्चर हो गया था। नियम के अनुसार उसे 2 लाख रुपये का मुआवजा मिलना था लेकिन उसे 5.4 लाख रुपये मिला। वहीं तीन मामलों में अनुग्रह राशि से केवल 10 हजार रुपये अधिक मुआवजा दिया गया।

वहीं रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल ने मौतों के 183 मामले में हर एक परिजन को 8 लाख रुपये का अतिरिक्त मुआवजा दिया है। इन परिवारों ने कहा था कि जिनकी मृत्यु हुई है, वह परिवार में एकमात्र कमाने वाले थे। वहीं

मौत से जुड़े 9 मामलों में अभी याचिका लंबित है। इसमें कोलकाता के 4, पटना के तीन और रांची के दो मामले शामिल हैं। वहीं कोलकाता के एक मामले को खारिज कर दिया गया।

जब यह हादसा हुआ तो दौरान रेलवे ने मारे गए लोगों के परिजनों के लिए 10 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायल और विकलांगों के लिए 2 लाख रुपये और मामूली रूप से घायलों के लिए 50 हजार के मुआवजे का ऐलान किया था। हादसे के 16 महीना में 1102 यात्रियों में से 76त्न लोगों ने बेहतर राहत के लिए कोलकाता, भुवनेश्वर, रांची, पटना, चेन्नई और भोपाल में रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल का रुख किया है।

दीपावली पर स्थानीय सामग्री के उपयोग को करें प्रोत्साहित

- मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले-सभी में वोकल फॉर लोकल का भाव रहना चाहिए

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को दीपावली की हार्दिक बधाई देते हुए मंगलकामना की है कि सभी के जीवन में श्री महालक्ष्मी जी की कृपा बनी रहे। उन्होंने कहा कि दीपावली पर सभी के मन में 'वोकल फॉर लोकल' का भाव रहना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी सभी को वोकल फॉर लोकल के लिये प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा कि दीया-बाती बनाने वालों, साफ-सफाई व श्रृंगार की सामग्री बनाने वालों और ऐसी ही गतिविधियों में स्थानीय स्तर पर लगे व्यक्तियों और उनके परिवारों से मिलकर, दीपावली पर्व के उत्साह और उल्लास का प्रकटीकरण होता है। भगवान श्रीराम ने भी सभी लोगों के साथ मिलकर सभी के कल्याण की कामना के साथ अपना राज्य चलाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी स्थानीय सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित करते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भी दीपावली मनाने के लिए स्वयं बाजार जाकर स्थानीय स्तर पर बनाए गए उत्पाद खरीदेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम सबका यह सामूहिक प्रयास हो कि गरीब और मजदूर परिवार का कोई भी सदस्य भूखा न रहे, सबके जीवन में दीपावली का आनंद हो, हम सामूहिक दायित्व के रूप में दीपावली का पर्व मनाएं।

भोपाल में मंत्री ने लगाई झाड़ू,सड़कों के गड्ढे भी देखे

- महापुरुषों की मूर्तियों की भी सफाई की,30 अक्टूबर तक 17 वार्डों में चलेगा अभियान

भोपाल। खेल मंत्री विश्वास सारंग ने शनिवार को भोपाल के सुभाष नगर इलाके में झाड़ू लगाकर सफाई की और सड़कों के गड्ढे देखें। उन्होंने गड्ढों को तुरंत भरने को कहा। करीब एक घंटे तक वे इलाके में घूमे। इस दौरान महापुरुषों की मूर्तियों की सफाई भी की गई। नरेला विधानसभा के 17 वार्डों में अगले 5 दिन यानी, 30 अक्टूबर तक विशेष सफाई अभियान चलेगा। इसकी शुरुआत शनिवार को मंत्री सारंग ने खुद सफाई करके की। इस दिन वार्ड-36, 39, 44 और 79 से अभियान चला। मंत्री सारंग ने बताया, दिवाली पर हम अपना घर सजाते हैं। सफाई करते हैं। इसके साथ गली-मोहल्ले और कॉलोनी भी साफ होने चाहिए। इसलिए बड़े स्तर पर सफाई अभियान की शुरुआत की है। यहां के एक-एक वार्ड में 30 अक्टूबर तक अभियान चलेगा। इस दौरान सीवेज-सड़क की सफाई, सड़कों की मरम्मत करेंगे। वहीं, बंद स्ट्रीट लाइट चालू किया जाएगा। ताकि, दिवाली पर शहर रोशन हो सके। बारिश के चलते भोपाल की ज्यादातर सड़कें जर्जर हो गईं। जिनकी मरम्मत की जरूरत है। इस अभियान में इन सड़कों की मरम्मत भी की जाएगी। ताकि, लोगों को परेशानी न हो। खासकर गली-मोहल्ले और कॉलोनियों की सड़कों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। मंत्री सारंग ने बताया कि अभियान में महापुरुषों की मूर्तियों को भी संवारेंगे। उनकी सफाई होगी और रंग-रोगन किया जाएगा।

भोपाल के अवधपुरी में बीच सड़क पर पोल,मंत्री नाराज

- ट्रांसफार्मर की वजह से अटकी पोल शिफ्टिंग,मंत्री बोलीं-जल्दी शिफ्ट करें

भोपाल। भोपाल के अवधपुरी इलाके में कंचन नगर बीडीए रोड पर बीच सड़क पर बिजली के पोल है। इससे कई हादसे हो चुके हैं। पोल की अब तक शिफ्टिंग नहीं होने पर राज्यमंत्री कृष्णा गौर ने नाराजगी जताई है। उन्होंने बिजली कंपनी को जल्द ही पोल शिफ्ट करने को कहा है। यह सड़क कंचन नगर से पूर्वांचल (अवधपुरी) तक जाती है। इससे बीडीए, गिरनार समेत कई इलाके जुड़े हैं। हर रोज एक से दो लाख लोग आवागमन करते हैं। ऐसे में उन्हें न सिर्फ परेशानी उठानी पड़ती है, बल्कि हादसों का डर भी बना रहता है। इलाके के मोहित ने बताया, कई पोल सड़क के बीचों-बीच है। जिससे गाड़ियां नहीं निकल पाती। पिछले डेढ़ साल से दिक्कत है। बावजूद उसे हल नहीं किया जा रहा। राज्यमंत्री गौर हाल ही में इलाके के दौरे पर पहुंची थीं। इस दौरान लोगों ने उन्हें बीचों-बीच खड़े बिजली के पोल के बारे में बताया। उन्होंने बिजली कंपनी के अफसरों कहा कि सड़क के बीचों-बीच लगे बिजली के ट्रांसफॉर्मर और पोल को सड़क के किनारे शिफ्ट किया जाए। ताकि रहवासियों को दिक्कत न हो। बीच सड़क पर एक ट्रांसफॉर्मर है। उसी से बिजली की लाइन और पोल जुड़े हैं। सबसे पहले ट्रांसफॉर्मर शिफ्ट होगा। फिर पोल की शिफ्टिंग की जाएगी। एक सप्ताह में यह काम पूरा करने को कहा है। इधर, बिजली कंपनी के सिटी सर्किल महाप्रबंधक बीबीएस परिहार का कहना है कि कंपनी अपने खर्च पर कोई शिफ्टिंग नहीं करती है। जिसकी सड़क है, वही राशि जमा करेगा तो शिफ्टिंग की जाएगी।

भोपाल मैनेजमेंट एसोसिएशन द्वारा नेतृत्व मूल्यांकन पर वार्ता आयोजित

भोपाल। भोपाल मैनेजमेंट एसोसिएशन (बीएमए) ने 'नेतृत्व मूल्यांकन और सामाजिक नेतृत्व' पर एक ज्ञानवर्धक सत्र का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इसमें एसोसिएशन फॉर सस्टेनेबल रूरल एम्पावरमेंट (आसरे) के अध्यक्ष और ग्राम्या के सीएमडी डॉ. पंकज शुक्ला ने भाग लिया। डॉ. शुक्ला ग्रामीण विकास में आशा और उन्नति के प्रतीक के रूप में खड़े हैं, जो भारत के ग्रामीण परिवेश को नया रूप देने के लिए एक मजबूत समर्पण का प्रदर्शन करते हैं। उनका विज़न, 'समृद्ध ग्राम समृद्ध भारत' (समृद्ध भारत के लिए समृद्ध गाँव), उनके इस विश्वास पर जोर देता है कि देश की समृद्धि ग्रामीण समुदायों की प्रगति से निकटता से जुड़ी हुई है। वे सतत विकास और समावेशी वृद्धि के माध्यम से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच विभाजन को मिटाने का प्रयास करते हैं, जो विकसित भारत 2047 के उद्देश्यों के साथ पूरी तरह से संरेखित है। डॉ. पंकज शुक्ला ने अपनी आकर्षक प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसमें नेतृत्व मूल्यांकन की जटिलताओं और सामाजिक नेतृत्व के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने प्रभावी नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं की खोज की, आत्म-जागरूकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अनुकूलनशीलता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। डॉ. शुक्ला ने व्यक्तिगत नेतृत्व शैलियों के मूल्यांकन के लिए व्यावहारिक रूपरेखा भी प्रदान की, जिससे उपस्थित लोगों को अपनी ताकत और विकास के अवसरों को पहचानने में सहायता मिली।

अखिल भारतीय विविध संगठन प्रचारक वर्ग ग्वालियर में

भोपाल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत प्रचारक बन्धुओं का वर्ग 31अक्टूबर से 4 नवम्बर 2024 तक, शुभ दीपावली पर्व पर ग्वालियर, मध्यप्रदेश में आयोजित हो रहा है। इस वर्ग में देश भर से 31 विविध संगठन के कुल 554 प्रचारक सहभागी होनेवाले है। इस वर्ग का स्वरूप प्रशिक्षणात्मक रहेगा। यह अखिल भारतीय वर्ग प्रति 4-5 वर्ष में एक बार आयोजित होता है। वर्ग में पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत एवं सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले सहित संघ के सभी सहसरकार्यवाह तथा अन्य प्रमुख पदाधिकारी सहभागी होंगे। वर्ग में अपेक्षित यह सभी कार्यकर्ता समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीयता के भाव से समाज हित में सक्रिय रहते हैं।यह मज़दूर, किसानों, विद्यार्थियों तथा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं ग्रामीण, वनवासी, शहरी क्षेत्र में कार्य पर चर्चा करेंगे। इस वर्ग में व्यक्तिगत कुशलक्षेम, व्यक्तिगत विकास, स्वाध्याय के साथ समाज जीवन के लिये आवश्यक कार्यों की चर्चा एवं परस्पर अनुभव सांझा किये जाते है। सभी अपने-अपने कार्य व अनुभवों का आदान-प्रदान करते हुए विस्तार से चर्चा करते हैं। राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्यों से जुड़े मुद्दों दिव्यांगजनों , युवा एवं महिला सशक्तीकरण, स्वावलम्बन, सुरक्षा, जैविक कृषि, जल संधारण, पर्यावरण संरक्षण, घुमन्तु कार्य, व्यसन मुक्ति जैसे अन्यान्य विषयों पर निरंतर सक्रिय ये सभी कार्यकर्ता इस वर्ग में मंथन करेंगे।

हर जनप्रतिनिधि कम से कम दस महिलाओं को बनाएंगे सदस्य

- एमपी में बीजेपी का बड़ा टारगेट, बनाएगी अब दो करोड़ सदस्य
- सीएम बोले-बेरोजगारों की सूची बनाएं-एमएलए-सांसद,जिला अध्यक्ष

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के माध्यम से संभाग स्तर पर नए उद्योग लगने का मौका आने वाला है। इससे रोजगार सृजन होगा, इसलिए सांसद, विधायक, जिला पदाधिकारी अपने क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं की लिस्ट बनाएं, ताकि उन्हें रोजगार दिया जा सके। रीजनन इंडस्ट्री कांक्लेव 7 दिसंबर को नर्मदापुरम में होगी। उन्होंने कहा कि हर लोकसभा क्षेत्र के लिए 120 करोड़ के कामों को मंजूरी सरकार दे रही है। हर विधानसभा क्षेत्र के लिए 15 करोड़ रुपए के काम कराए जा रहे हैं। इसलिए विधायक संगठन के साथ मिलकर कार्ययोजना तैयार कराएं। बीजेपी दफ्तर में संगठन पर्व को लेकर आयोजित कार्यशाला में इससे पहले सदस्यता अभियान में कमजोर परफार्मेंस वाले विधानसभा क्षेत्रों और जिलों की जानकारी संगठन की ओर से दी गई और सुधार के लिए कहा गया। इस दौरान प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने कहा कि अब सदस्यता अभियान में दो करोड़ सदस्य बनाना है। शनिवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय संगठन पर्व को लेकर आयोजित प्रदेश स्तरीय कार्यशाला में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि बीजेपी का कार्यकर्ता त्योहारों को मनाने के साथ-साथ संगठन का पर्व भी मनाता है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार में नारी सशक्तिकरण को लेकर लगातार काम हो रहा है। उन्होंने 1 नवंबर को स्थापना दिवस को लेकर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी दी।

सीएम बोले- बेरोजगारों की सूची बनाए सांसद और विधायक

कार्यशाला में सीएम मोहन ने कहा कि प्रदेश में स्थापना दिवस कार्यक्रम 4 दिन तक चलेंगे, गोवर्धन पूजा धूमधाम से मनाने का निर्णय सरकार ने लिया है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार काम कर रही है। अभी देश में दूध उत्पादन में एमपी का प्रतिशत 9 है, जिसे 20 प्रतिशत तक ले जाने के लिए काम करना है। हम दूध पर बोनस देने वाले हैं। जो लोग 10 से ज्यादा गाय पालेंगे, उन्हें सरकार अनुदान देगी। उन्होंने कहा कि एक्सीडेंट में घायल होने वालों की जान बचाने के लिए सरकार ने तय किया है कि सूचना मिलते ही एंबुलेंस और एयर एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाएंगे। घायलों उपचार की पूरी सुविधा मिलनी चाहिए। अगर कोई आयुष्मान योजना के दायरे से बाहर है तो वह नॉमिनल राशि जमा कर देगा और बाकी उपचार सरकार कराएगी। मुख्यमंत्री ने सत्ता और संगठन के कामों को लेकर कई जानकारियां भी दीं। प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि 2 सितंबर से शुरू हुए सदस्यता अभियान में अब तक 1 करोड़ 60 लाख लोग बीजेपी से जुड़ चुके हैं। पार्टी ने डेढ़ करोड़ सदस्य बनाने का टारगेट तय किया था। वहीं 15 अक्टूबर से शुरू हुआ सक्रिय सदस्यता अभियान कार्यक्रम 31 अक्टूबर तक चलेगा। शर्मा ने सदस्यता अभियान में अच्छा काम करने वालों की तारीफ करते हुए कहा कि छिंदवाड़ा और इंदौर ने इतिहास रचा है। शर्मा ने दावा करते हुए कहा कि आगामी चुनावों में भोपाल उत्तर और मध्य से भी भाजपा का विधायक होगा। इसके पहले मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह, राष्ट्रीय सह चुनाव अधिकारी नरेश बंसल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने कार्यशाला का शुभारंभ किया

आधा दर्जन विधानसभा क्षेत्रों की परफॉर्मेंस खराब

प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने कहा कि अंबाह, अटेर, खरगापुर, पानसेमल समेत आधा दर्जन विधानसभा क्षेत्र में संगठन का सदस्यता परफॉर्मेंस बहुत ही खराब है। उन्होंने इन जिलों के पदाधिकारी को कहा कि अभी चुनाव नहीं हैं, इसलिए संगठन की व्यवस्था सुधारने का समय है। संगठन पर्व के माध्यम से संगठन को मजबूत बनाने का जो अभियान चलाया गया है, उसमें लगातार काम करते रहना है। शर्मा ने कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सदस्यता का टारगेट डेढ़ करोड़ के बजाय 2 करोड़ करने के लिए कहा है। यह लक्ष्य बहुत कठिन नहीं है।

शहर में ससुर की जासूसी के लिए 'जेम्स बॉन्ड' बना दामाद

- जूते से हुई पहचान तो कपड़े उतारकर ससुराल वालों ने की पिटाई
- राजधानी भोपाल में दामाद को ससुर की जासूसी पड़ गई भारी

भोपाल। एक दामाद ने अपने ससुर की जासूसी करने के लिए हद ही कर दी। ससुर पर शक होने के कारण दामाद ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर बुर्का पहनकर ससुर के घर जासूसी करने पहुंचा। दामाद की चालाकी उसके जूते की वजह से बेनकाब हो गई है। इसके बाद ससुराल के लोगों ने कपड़े उतारकर उसकी कुटाई कर दी है। यह घटना भोपाल के बागसेवनिया क्षेत्र के अमराई इलाके की है। बताया जा रहा है कि दामाद को अपने ससुर पर शक था, जो घर में अकेले रहते थे। दामाद को शक था कि ससुर घर में कुछ गलत काम कर रहे हैं। इस शक की वजह से दामाद ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर ससुर की जासूसी करने की योजना बनाई। योजना के तहत दामाद और उसके दोस्त बुर्का पहनकर ससुर के घर पहुंच गए। दामाद और उसके दोस्तों ने सोचा था कि बुर्का पहनकर उन्हें कोई पहचान नहीं पाएगा और वे आसानी से ससुर की जासूसी कर सकेंगे। लेकिन उनकी यह योजना उस वक्त धरी की धरी रह गई, जब घरवालों की नजर उनके जूतों पर पड़ी। घरवालों को शक हुआ और उन्होंने इन बुर्का पहने हुए लोगों को रोककर पूछताछ शुरू कर दी। जैसे ही इन लोगों से बुर्का हटाया गया, तो घरवाले हैरान रह गए। बुर्का पहने हुए लोग कोई और नहीं बल्कि उनका दामाद और उसके दोस्त थे। यह देखकर घरवालों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। उन्होंने दामाद और उसके दोस्तों की जमकर पिटाई कर दी। इस घटना का वीडियो किसी ने बनाकर सोशल मीडिया पर डाल दिया, जो अब तेज़ी से वायरल हो रहा है। इस मामले में बागसेवनिया थाना प्रभारी अमित सोनी ने बताया कि अमराई क्षेत्र के राजेश कुमार ने शिकायत दर्ज कराई है कि 3 लड़के बुर्का पहनकर उनके घर में घुस आए थे। घरवालों ने जब इन्हें रोका तो इन्होंने बुर्का हटाया। बुर्का हटाते ही पता चला कि ये लड़के कोई और नहीं बल्कि राजेश कुमार के दामाद और उनके दोस्त थे। फ़िलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उसके आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

बड़वानी में बाइक पर पलटा ट्रक,पिता-पुत्र समेत 4 की मौत

प्रत्यक्षदर्शी बोले-ट्रक ओवरटेक कर आगे बढ़ा, गाय को टक्कर मारकर पलट गया

भोपाल। बड़वानी में ट्रक ने गाय को टक्कर मारी, फिर बाइक सवार और राहगीरों पर पलट गया। हादसे में 4 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में पिता-पुत्र, भतीजा और पड़ोसी शामिल हैं। ट्रक चालक और उसका साथी फरार हो गए। हादसा सेंधवा के पुराने एबी रोड

पर हायर सेकेंडरी स्कूल के सामने शुक्रवार रात करीब 1 बजे हुआ। ट्रक के नीचे दबे लोगों को क्रेन की मदद से निकाला गया। प्रत्यक्षदर्शी शाकिब शेख ने बताया, हम सेंधवा के नए बस स्टैंड से घर की ओर लौट रहे थे। अचानक एक तेज रफ्तार ट्रक ओवरटेक कर आगे निकला। सरकारी स्कूल के सामने पहुंचते ही पहले गाय को टक्कर मारी। फिर पलट गया। सभी मृतक नागलवाड़ी के सालीकला के रहने वाले थे। रिंगनिया मेहता और उसका बेटा बाइक पर थे। उनके साथ रोड किनारे रिंगनिया का भतीजा बबलू और पड़ोसी श्यामलाल खड़े थे। तभी हादसा हो गया। चारों सेंधवा में एक निजी जिनिंग में मजदूरी करते थे। देर रात काम खत्म करने के बाद शहर से 10 किमी दूर अपने गांव सालिकला लौट रहे थे। जानकारी के अनुसार, ट्रक महाराष्ट्र के शाहदा से मिर्ची भरकर पंजाब के लुधियाना जा रहा था। शहर थाना पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए सिविल अस्पताल भेजा है। पुलिस ट्रक चालक और उसके साथी की तलाश में जुटी है। हादसे में मरने वाले रिंगानिया, बेटे जितेंद्र और भतीजे बबलू का एक साथ अंतिम संस्कार किया गया। दमोह में शुक्रवार रात करीब 8 बजे ट्रैक्टर ट्रॉली पलट गई। ट्रॉली में सवार 33 लोग घायल हो गए। सभी को बटियागढ़ स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। इनमें 8 महिलाओं की हालत गंभीर है, जिन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। जानकारी के अनुसार सभी लोग जिले के मदनपुर गांव में तेरहवीं के कार्यक्रम से लौट रहे थे। इस दौरान सादपुर गांव के पास ट्रैक्टर ट्रॉली पलट गई। सिंगपुर सरपंच प्रतिनिधि महेंद्र कटारे ने अपने निजी वाहन से घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया।

एमपी में धनतेरस पर दिखेगा तूफान 'दाना' का असर

जबलपुर-शहडोल,रीवा-सागर संभाग में 3 दिन बारिश का अलर्ट,ठंड भी बढ़ेगी

भोपाल। मध्यप्रदेश में इस बार दिवाली पर मौसम बदला रह सकता है। खासकर धनतेरस वाले दिन। मौसम विभाग ने 27, 28 और 29 अक्टूबर को पूर्वी हिस्से यानी, जबलपुर, शहडोल, रीवा और सागर संभाग के जिलों में बूंदाबांदी का अलर्ट जारी किया है। 29 अक्टूबर को ही धनतेरस है। चक्रवाती तूफान 'दाना' की वजह से ऐसा मौसम रहेगा। इसका असर रविवार से देखने को मिलेगा। शनिवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर, ग्वालियर समेत पूरे प्रदेश में मौसम साफ रहने और तेज धूप निकलने की संभावना है। तूफान के असर से प्रदेश में हवा की रफ्तार भी तेज होगी। अभी कई शहरों में हवा की गति 10 से 20 किमी प्रतिघंटा तक है। 27 अक्टूबर को सागर, दमोह, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज, मैहर, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा जिलों में गरज-चमक के साथ बारिश हो सकती है। वहीं, 28 और 29 अक्टूबर को भी मौसम बदला रहेगा। बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, रायसेन, नरसिंहपुर, जबलपुर, कटनी, उमरिया, डिंडौरी, शहडोल, अनूपपुर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला और बालाघाट में गरज-चमक और बारिश की स्थिति बनी रहेगी। प्रदेश में इन दिनों 3 तरह का मौसम

है। रात से सुबह तक धुंध छा रही है। सुबह के समय हल्की सर्दी और दिन में तेज धूप निकल रही है। बदले मौसम की वजह से लोगों की सेहत पर भी असर पड़ा है। गुरुवार-शुक्रवार की रात में अधिकांश शहरों में टेम्प्रेचर 20 डिग्री से कम रहा। भोपाल में 17.6 डिग्री, बैतूल में 17.2 डिग्री, धार में 17.3 डिग्री, गुना में 19.6 डिग्री, ग्वालियर में 19.9 डिग्री, इंदौर में 16.8 डिग्री, खंडवा में 18 डिग्री, पचमढ़ी में 16.8 डिग्री, रायसेन में 18.6 डिग्री, रतलाम में 16 डिग्री, उज्जैन में 17.5 डिग्री रहा था। इसी तरह छिंदवाड़ा में 18.5 डिग्री, जबलपुर में 19.4 डिग्री, खजुराहो में 19.8 डिग्री, मंडला में 17.6 डिग्री, नौगांव में 18 डिग्री, सिवनी में 19.6 डिग्री, टीकमगढ़ में 18.5 डिग्री और मलाजखंड में 19.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, अधिकांश शहरों में दिन में पारा 30 डिग्री से ज्यादा रहा। मौसम विभाग के अनुसार- इस तूफान का असर ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु-पुडुचेरी में असर ज्यादा बना है।

तूफान से निपटने के लिए ओडिशा ने नेशनल डिजास्टर रिलीफ फोर्स (NDRF), ओडिशा डिजास्टर रिलीफ फोर्स (ODRF) और फायर ब्रिगेड की 288 टीमें तैनात की है। तूफान के गंभीर असर की आशंका वाले 14 जिलों के सभी स्कूल-कॉलेज की 25 तक छुट्टी की गई है। इन जिलों के 10 लाख लोगों को शिफ्ट किया जा रहा है। सरकारी कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द की गई हैं। राज्य ने NDRF की अतिरिक्त टीमें भी मांगी हैं। इसके अलावा ओडिशा में 150 और बंगाल में 200 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। प्रदेश से 15 अक्टूबर को मानसून लौट चुका है, लेकिन सिस्टम की एक्टिविटी की वजह से कई जिलों में बारिश का दौर जारी है।

कहानी

महेश कुमार केशरी

अनोखा उपहार

एक चौक पर एक लँगड़ी बुढ़िया भिक्षाटन करके अपनी जीविका चलाती थी। दीपावली का दिन था। उसकी तबीयत उस दिन खराब थी। बावजूद इसके किसी तरह वो लँगड़ाती हुई अपने नियत स्थान के चौक पर पहुँची। लेकिन सुबह से शाम हो गयी कोई भीख देने वाला उसको उस दिन नहीं आया।लोग बाजार तो आते। लेकिन, लँगड़ी बुढ़िया की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। सब लोग कँदीले, दीये, और मोमबत्तियाँ खरीदने में मशगूल थें। कोई पटाखे, खरीद रहा था। तो कोई मिठाई। तो कोई कपड़े। बुढ़िया की उम्र बहुत हो चुकी थी। करीब सत्तर-अस्सी की रही होगी बुढ़िया। उसको अपने खाने पीने पहनने की कोई चिंता नहीं थी। उसकी चिंता तो बैजू को लेकर थी। बैजू वैसे तो उसका कुछ भी नहीं था। लेकिन बहुत कुछ था। दर असल बैजू को बुढ़िया ने एक ट्रेन में लावारिस पाया था। बुढ़िया ने ही उसको पाल-पोसकर बड़ा किया था। एक तरह से बैजू उसके पोते की उम्र का था। दोनों में बड़ा स्नेह था। बुढ़िया का क्या था। खाती, खाती। ना खाती, ना खाती। पहनती-पहनती, ना पहनती ना पहनती। लेकिन, बच्चों को नये कपड़े, और मिठाई ना मिले।तो उनकी दीपावली कैसे मनती ?

बुढ़िया, इसी चिंता में डूबी थी।अब शाम होने को हो आई थी। सूरज भगवान डूबने वाले थें। चाँद भी आकाश में थोड़ा - थोड़ा दिखाई देने लगा था। लँगड़ी बुढ़िया ने चौक से अपना फटा बोरा और कटोरा उठाया। और घर की ओर बड़े दुःखी मन से चलने को हुई।

तभी उसे एक सज्जन आदमी जो वेशभूषा से कोई बड़ा सेठ लग रहा था। उसकी ओर आता दिखाई दिया।

ये सज्जन आदमी बुढ़िया के पास बहुत पहले भी कई बार आ चुका था। लेकिन इस बार वो उस बुढ़िया के पास बहुत सालों के बाद आया था।

ये सज्जन अपने बेटे से बहुत परेशान रहता था।दर असल उसका बेटा विदेश में जाकर बस गया था।सेठ के घर में अकूत धन - संपत्ति थी। लेकिन संतान का सुख नहीं था।वो अक्सर बुढ़िया के पास आता था। और अपनी दीनता की कहानी कहता। बुढ़िया उसे दिलासा देती कि ईश्वर पर विश्वास रखो। एक दिन तुम्हरा बेटा जरूर तुम्हारे पास लौट आयेगा।

सज्जन व्यक्ति के चेहरे पर प्रसन्नता साफ झलक रही थी। वो, बुढ़िया के पास आकर बोला - 'माई आज जानती हो मेरे साथ क्या हुआ? आज मेरा बेटा विदेश से अपने परिवार के साथ लौटा आया है, हमारे घर! हमारे साथ हमेशा - हमेशा रहने के लिये, मेरे पोते को लेकर। और कह रहा था। कि अब वो हमारे साथ ही हमेशा यहीं रहेगा। मैंने माता से मन्नत माँगी थी। कि अगर मेरा बेटा का मन फिर गया। और वो हमारे साथ विदेश से आकर रहने लगेगा।तो मै आपको प्रसाद चढाऊँगा। मैं, पूरे सालों भर तक मँदिर जाता रहा। रोज नियम से भगवान् को जल चढ़ाता रहा था। मैंने भगवान को वचन दिया था।कि जिस दिन मेरा बेटा विदेश छोड़कर यहाँ रहने के लिए लौट आयेगा। उस दिन मैं ग्यारह भूखे लोगों को खाना खिलाऊँगा। ईश्वर की भक्ति जीवण भर करूँगा।

लेकिन माई इसमें तुम्हारी भी कुछ सिद्धी है। तुम्हारा भी आशीर्वाद है। तभी मेरा बेटा लौट आया है।आज मैं इतना खुश हूँ। इतना खुश हूँ कि आज अगर तुम मुझसे मेरी पूरी दौलत भी माँग लो। तो मैं खुशी - खुशी दे दूँ। बोलो, माई क्या माँगती हो ?'

बुढ़िया, अपने पेशे में बहुत ईमानदार थी। वो भिक्षा में मिले अपने आनाज और रेजगारी पैसों से ही संतुष्ट थी। उसे बाहर से मिले किसी उपहार की कोई खास चाह नहीं थी।

बुढ़िया बोली - 'बेटा रहने दो। तुम्हारा बेटा लौट आया यही मेरे लिये बहुत है। मुझे कुछ नहीं चाहिए।साईं का आशीर्वाद तुम्हारे घर पर बना रहे। मेरी भगवान् से बस यही कामना है।'

सज्जन आदमी ने अनुरोध किया -

'नहीं माई मेरे बेटे के लौटने में तुम्हारा आशीर्वाद प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर जरूर है। इसलिए तुम्हें कुछ ना कुछ तो लेना ही होगा।'

'बेटा, तुम्हारी जो इच्छा हो।'

सज्जन, आदमी ने अपनी कार का दरवाजा खोला। और उसमें से मिठाईयों का एक बड़ा कार्टून।कपड़ों की थैली। पटाखों का एक पैकेट। दीयों की लड़ियाँ। और बैजू के लिये सोनपापड़ी का पैकेट निकाल कर बुढ़िया की झोपड़ी में रख आया। और फिर बुढ़िया माई के हाथ पर पाँच सौ रुपये के चार नोट रख दिये। बुढ़िया ने बैजू को जब पटाखे और कपड़े दिखाये तो बैजू भी खुशी से मचल उठा।

बुढ़िया, ने आज दीपावली पर सालों से वीरान अपनी झोपड़ी में दीये जलाये।तो वो, झोपड़ी दीपों की रौशनी से जगमगा उठी। बुढ़िया, माई ने नहा - धोकर नई साड़ी पहनी।

और माता लक्ष्मी की पूजा की। आखिर, एक कार्टून मिठाई कौन खाता। मिठाई और फाजिल कपड़ों को उसने अड़ोसियों पड़ोसियों में बाँट दिया।

पतरकी ने पूछा -'माई, आज तेरी कोई लॉटरी लगी है, क्या ?'

बुढ़िया मुस्कराते हुए बोली - 'आज साक्षात् भगवान् के दर्शन हुए हैं।नहीं तो आज उपवास करना पड़ता। और हमारी दीपावली फीकी - फीकी ही रहती।आज साक्षात साईं हमारे दरवाजे पर आये थें।सब उनकी ही कृपा है।

पतरकी को कुछ समझ नहीं आया। लेकिन,नये कपड़ों और मिठाईयों से उसकी दीपावाली भी जगमगा उठी थी!

(लघुकथा)

प्रभुनाथ शुक्ल

भगवान और इंसान

शहर के उस चौराहे को मंदिर चौराहा बोलते थे। हालांकि वहां मस्जिद भी थी। यहाँ आकर लोगों को काफी शान्ति मिलती थी। मंदिर में जहाँ सुबह -शाम आरती और प्रार्थना से चित्त प्रशनन हो जाता था। वहीं मस्जिद में अजान होती। दिन -भर की दिनचर्या से थके-हारे लोग ईश्वर की शरण में आनंद के लिए आते थे। सुबह -शाम यहाँ आने वाले लोगों की भीड़ होती। बुजुर्गों की तादात काफी रहती थी।

राधिका माँ शाम अपनी दस साल की पोती अनुष्का के साथ मंदिर आयी थीं। अनुष्का को यहाँ की शान्ति बहुत अच्छी लगी। किसी से कोई मतलब नहीं। लोग -अपने धर्म स्थल पर आते और अपनी पूजा, इबादत और प्रार्थना करने के बाद शान्ति से चले जाते। कोई पुलिस और कोई सुरक्षा नहीं। सब हँसते -मुस्कुराते मिलते। एक -दूसरे धर्म को मानने वाले भी आपस में घंटों -घंटों बात करते। वहां का वतावरण ऐसा था जैसे दुनिया का स्वर्ग यहीं हैं। अनुष्का को यह जगह बेहद पसंद आ रहीं थीं। लेकिन उसके मन में एक सवाल बार-बार उठ रहा था।

बूढ़ी माँ एक बात मैं आप से पूंछू ?

क्यों नहीं, पूछो लाडो माँ ! आखिर भगवान आपस में क्यों नहीं लड़ते?

भगवान क्यों लड़ेगा बेटी?

क्यों नहीं लड़ते हैं बूढ़ी माँ। यहाँ तो मंदिर और मस्जिद दोनों हैं। यहाँ तो दोनों धर्मों के अलग -अलग भगवान हैं। लेकिन इसमें कौन बड़ा है इसको लेकर क्या कभी भगवान और अल्हाह से लड़ाई नहीं होती है। भगवान को तो लड़ते नहीं देखा है।

फिर माँ...इंसान अपने -अपने धर्म को लेकर क्यों लड़ता है। जब भगवान नहीं लड़ते फिर इंसान क्यों लड़ता है। बूढ़ी माँ के पास अनुष्का के सवाल का कोई जबाब नहीं था वह बुत बन कर खड़ी थीं।

व्यंग्य

सुखराम की पेंशन

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

टीचर सुखराम जी को रिटायर हुए दो माह बीतने को आए । पर अभी तक उनकी पेंशन चालू नहीं हुई। हर सप्ताह अपने गांव से दस किलोमीटर दूर साइकिल चलाते स्कूल पहुंचते और बाबू से पेंशन के बारे में पूछते। वह मना कर देता अभी तक पेंशन विभाग से स्वीकृत होकर नहीं आई। वह बोला 'सुखराम जी! जमाने के साथ चलो, आप अपनी घड़ी से दुनिया भर की घड़ी मिलाना छोड़ दो। पेंशन कार्यालय जाओ, तभी सही स्थिति मालूम होगी।' मरता क्या ना करता। जाने का मन बनाया।

एक दिन सुखराम जी शहर जाकर पेंशन विभाग पहुंचे। अधिकारी तो थे नहीं । कुछ लोग पेंशन स्वीकृति की चाह में बड़े बाबूजी की प्रतीक्षा में खड़े थे। वहां खड़े चपरासी ने उन्हें सामने बरामदे में बैठने को कहा। सुखराम जी सोचने लगे, भगवान जाने यहां किस स्थिति से गुजारना पड़ेगा! अभी तो आने-जाने में सौ रुपए ढीले हो गए। तभी नीले रंग का सफारी सूट पहने बड़े बाबूजी कार से उतरे। कमरे में जाते ही कूलर चालू करवा शीतल होने लगे। उनसे मिलने के लिए सुखराम जी की बारी आई तो उन्होंने कहा 'दो माह होगए पर पेंशन केस अभी तक भी फाइनल नहीं हुआ।' बाबूजी ने उनसे ऊपर कमरे में बैठे संबंधित बाबू से बात करने को कहा। थोड़ी देर में सुखराम जी ने अपनी समस्या बाबू को बताई। बाबू ने अलमारी से ऊपर रखी फाइलों से गर्द हटाते हुए उसे देखकर कहा 'एक जगह हेड मास्टर जी के साइन छूटे पड़े हैं। इसीलिए यह ऑब्जेक्शन में है। इसे जल्दी ही वापस भेज देंगे । इतना समझो कि कम से कम एक महीना और लग जाएगा।' 'इतना समय तो पहले ही हो गया। समय पर भेज देते तो मुझे इतनी परेशानी नहीं होती।'

'तुम्हें तुम्हारी परेशानी दिखती है, हमारी नहीं? सुबह से शाम तक फाइलों में गर्दन झुकाए लगे रहते हैं! जो भी आता है वह छाती पर चढ़ता है।' सुखराम जी उसका मूड देख कुछ देर चुप्पी साधे रहे। बाबू ने कहा 'इसे हम जल्द ही भिजवा देंगे और हेड मास्टर जी के छूटे हुए साइन होकर आ जाएंगे। तभी यह फाइल सही रूप से पूरी हो पाएगी।' बाबू की बात सुन वह उठकर जाने को हुए तो बाबू ने कहा 'वैसे यह मामूली समस्या है । यहीं हल हो सकती। आप नीचे बड़े बाबूजी से मिल लो, सहज ही निपटारा हो जाएगा।'

सुखराम जी उत्साह भरे कदमों से सीढ़ियां उतरकर बड़े बाबूजी के कमरे में गए। उन्होंने अपनी समस्या बताई। वह बोले 'समझौते से सब कुछ संभव है।' उन्होंने घंटी बजाकर चपरासी को इशारा कर उनसे बात करने को कहा। चपरासी ने उन्हें थोड़ा दूर लेजाकर एक हजार रुपये भेंट करने की बात कही। आपकी फाइल आज ही यहां से फाइनल होकर भेजदी जाएगी। नहीं तो एक महीना और लग जाएगा।'

सुखराम जी अपने जीवन में ईमानदार, संस्कारित और मेहनती टीचर रहे हैं । उन्होंने चपरासी से बिना कुछ कहे कही पेंशन भवन की सीढ़ियां उतर आगे बढ़ गए। उन्हें रास्ते में उनके साथ लाइन में खड़ा एक व्यक्ति मिला। उससे पूछा 'क्या तुम्हारी समस्या का हल हो गया?' उसने कहा 'आज जमाना बदल गया। सबका साथ सबका विकास का जमाना है । थोड़ी अंटी ढीली कर दी , जो काम एक महीने में होता वह भी आज ही पूरा हो गया । इसी माह से मेरी पेंशन चालू हो जाएगी।' सुखराम जी को लगा है कि वह बड़े बाबूजी को ईमानदारी का पाठ पढ़ायेगा। पर अगले पल उन्होंने सोचा कि बेकार का पंगा लेने से क्या कुछ होगा? कोई सुनने वाला होता तो उन्हें यह दिन क्यों देखने को मिलते। यही सोचते अब वह तेजी से बस स्टैंड की ओर बढ़ गए।

जब शिक्षक गौण हो जाता है

कारुलाल 'कारुण्य'

मास्टर जी पुराने स्कूल आये
सम्मान हेतु थे बुलवाये
स्कूल जाते ही रह गये दंग
'डाटाफीडर' प्राचार्य संग
शिक्षा पर जब नज़र गड़ी
भाषाएँ तितर-बितर पड़ीं
साहित्यिकी बैठी सुबक रहीं
कला भी कोने में दुबक रहीं
वे दिन उन्हें तब याद आये
संस्कृति-पोषक थे छाये
ज्ञान की सरिता बहती थी
भाषा अभिषेक करती थी
साहित्य उड़ान भरता था
विशेषज्ञ अलग ही दिखता था
अब ज्ञान बना अंधा कुआं
अध्यापन मरणासन्न हुआ
संगीत,वाचनालय सुने पड़े
शिक्षाविद् डाटा लेकर खड़े
वक्तव्य भीतर ही मौन है
ये 'डाटाफ़ीडर' कौन है ?
फिर देखा आंखें छलक पड़ी
शिक्षा की आई ये कैसी घड़ी
कुछ पढ़ा-लिखा डाटाफीडर
हर सिर था उसके चरणों पर
तकनीक ने सबको टोंक दिया
शिक्षण को डाटा में झौंक दिया
जब शिक्षक गौण हो जाता हैं
समझो विध्वंस बो जाता हैं ।

कविता

कमलेश कुमार दीवान

ख्वाब लिए हैं

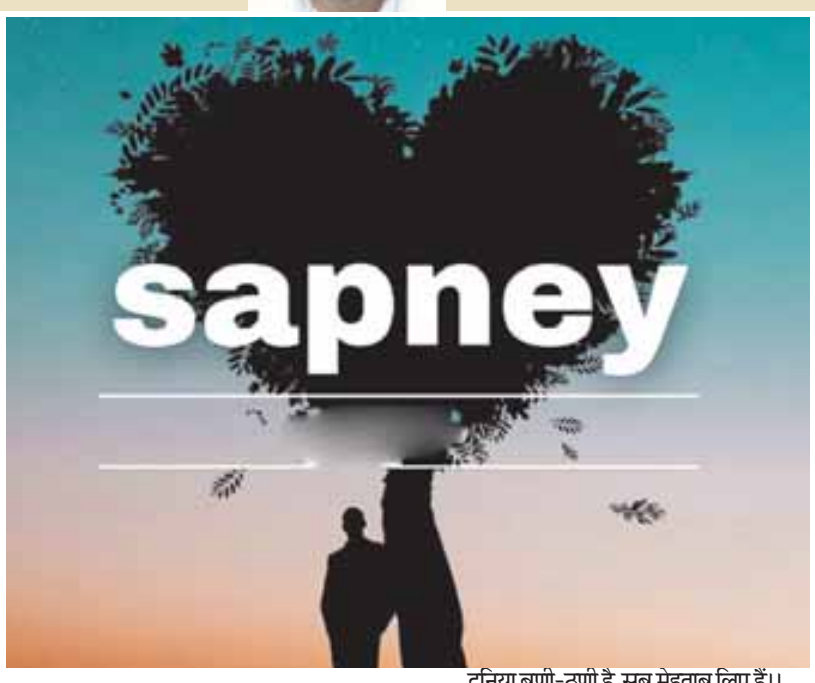

हम अपने साथ बहुत सा माल असबाब लिए हैं।
थोड़ी सी धूप छांव खुशी गम के सैलाब लिए हैं।।

चल तो रहे अकेले साथ में एहसास भी तो हो।
कैसी हो सर्दी गर्मी आप तपते आलाव लिए हैं।।

अब और बातें क्या करें सुनना है बहुत कुछ।
नारों के साथ झंडा तख्तियां भी किताब लिए हैं।।

चारों तरफ उदासी और न होने का भ्रम भी है।
दुनिया बणी-ठणी है सब मेहताब लिए हैं।।
तुम ही उठाओ परचम, गाओ गीत शांति के।
तारे सितारें साथ कायनात भी आफताब लिए है।

दुनिया में अमन-चैन
सुख शांति समृद्धि भी रहे।
आओ दुआ करे हम क्यों सब हिसाब लिए हैं।।

'दीवान' साथ चल रहे और चलते भी रहेंगे।
कुछ लोग तो ऐसे भी जो बस ख्वाब लिए हैं।

अक्स

अविनाश अग्निहोत्री

त्यौहार पर अपने बच्चे का हाथ पकड़े बाजार से अलंकार बड़े ही अनमने मन से गुजर रहा है।

वो कभी झोले में पड़ी सामान की पर्ची को देखता है। तो कभी जेब में पड़े चंद रुपयों को। कि तभी एक केले वाले की आवाज उसे अपनी ओर आकर्षित करती है।

लेलो बाबूजी लेलो,गढ़ वाला केला तीस रुपए दर्जन है और छुट्टे बीस।

कुछ पल उन्हें गौर से देखने के बाद वो यह महसूस करता है कि केले तो दोनों ही एक से है पर नासमझी में अपनी गढ़ से अलग होकर ये छुट्टे केले अपनी कीमत गवां चुके है।

तभी उसे उन छुट्टे केले में अपना अक्स दिखाई देने लगा।

समीक्षा

डॉ. मोनिका शर्मा

समीक्षिका

विडंबनाओं और मानसिक द्वंद्व को उकेरती प्रमोद भार्गव की कहानियां

सम-सामयिक टिप्पणियों से लेकर पौराणिक एवं आध्यात्मिक चिंतन तक, विविध विषयों को लेकर नियमित लेखन से जुड़े प्रमोद भार्गव जी की कहानियाँ सामाजिक परिवेश के अनगिनत पहलू समेटे हैं। विडंबनाओं को भी उकेरती हैं और मानसिक द्वंद्व का भी शाब्दिक खाका खींचती हैं। हाल ही में प्रकाशित कहानियों का संकलन 'प्रमोद भार्गव की चुनिन्दा कहानियाँ' उनकी बीस कहानियों का संकलन है। प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत से छपी इस किताब में शामिल कहानियाँ इंसानी मन की विविध छवियों से मिलवाती हैं। मानवीय बर्ताव का प्रभावी चित्रण लिए हैं। पुस्तक को समर्पित करने के भाव भी स्त्री जीवन को ही संबोधित हैं। प्रमोद भार्गव जी लिखते हैं - 'उन स्त्रियों को जो रूढ़ हो चुकी वर्जनाओं को तोड़ने का साहस रखती हैं।' सामयिक लेखन की निरंतरता के साथ ही प्रमोद भार्गव जी के चार कहानी संग्रह, पाँच उपन्यास एवं पर्यावरण, संस्कृति, आर्थिकी और विज्ञान सहित विविध विषयों पर तेरह पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। चुनिन्दा कहानियाँ लिए इस किताब में बीस कहानियाँ शामिल हैं।

आज के परिवेश की भयावह होती स्थिति से उपजे डर से घिरी मनःस्थिति लिए कहानी 'कोख में शिशु' अजन्मे बच्चे और माँ के संवाद को लिए है। साथ ही गाँव से लेकर शहर तक असुरक्षित हालातों में जीवन को घेरते भय को भय को भी उकेरती है। आज के दौर में स्त्रियों के सम्मान और सुरक्षा से जुड़ी चिंतनीय स्थितियाँ स्पष्ट दिखती हैं। मन और जीवन दोनों की उलझनों को प्रभावी ढंग से उकेरती

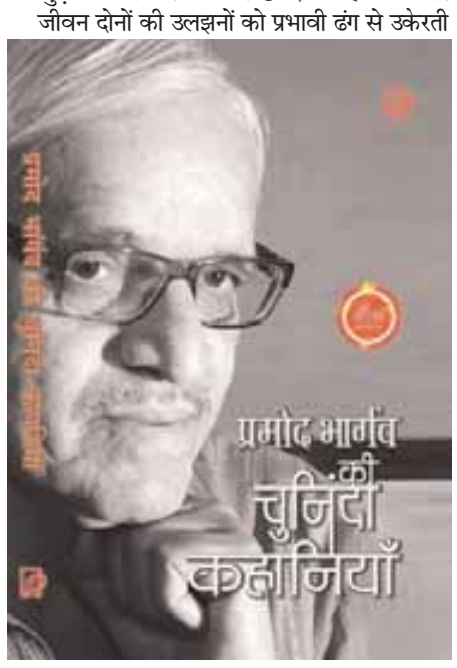

है। 'पहचाने हुए अजनबी' कहानी वैवाहिक जीवन में दूरियों और दुर्व्यवहार दोनों का खाका खींचती हैं। यह कहानी वैवाहिक दुष्कर्म की पीड़ा को सामने रखते हुए साझे जीवन में गरिमापूर्ण जुड़ाव के माने समझाती है। समसामयिक लेखन और पत्रकारिता से लम्बा जुड़ाव रखने के चलते प्रमोद भार्गव जी कहानियों के ऐसे विषय आज समाज-परिवार में बढ़ती बहुत विकृतियों को सामने रखते हैं। उनकी कहानियों के विषयों की विविधता और वर्तमान हालातों से जुड़ा विषय का ट्रीटमेंट प्रभावित भी करता है और विमर्श की राह भी खोलता है। बदलते मन-जीवन से जुड़े पक्षों को लेकर ठहरकर सोचने को विवश करता है। यह कटु सच है कि हालिया बरसों में वैवाहिक सम्बन्धों में भी बिखराव और हिंसक बर्ताव ने अपनी जगह बना ली है। अधिकतर मामलों में स्त्रियाँ ही यह दंश झेलती हैं। समाज की बंधी-बंधाई रूढ़ियों को तोड़ते निर्णय से जुड़ा कथानक 'पूर्ण बंदी', 'हौसले की उड़ान' और 'सती का 'सत' भी बहुत सी वर्जनाओं के बावजूद स्त्रियों द्वारा अपने अस्तित्व की सार्थकता समझने से जुड़े हैं। विपरीत परिस्थितियों से करने के बजाय खुद को साबित करने की राह चुनने के हौसले को लिए हैं। असल में देखा जाए तो किरदार समग्र समाज को दिशा दिखाते हैं। बदलाव का आधार बनाते हैं। नयेपन की स्वीकार्यता को बल देते हैं। हालांकि बहुत से मोर्चों पर जूझते किरदार कई बार उलझते भी दिखते हैं पर आमजीवन भी ऐसे ही उतार-चढ़ाव लिए होता है। भूमिका में लिखा भी है कि 'कहानीकार भली-भाँति जानता है कि उसने जो कहानियाँ रची हैं, क्यों रची हैं ? वो कौन से कारण और घटनाएँ रही होंगी, जो कथ्य का आधार बनीं।' संग्रह की कुछ कहानियाँ ग्रामीण परिवेश और जन-जीवन को भी लिए हैं। आंचलिक शब्दों और जमीनी अंदाज़ में इन कथाओं को लिखा गया है। 'गंगा बटाईदार', 'किसानी', 'दहशत' जैसी कहानियाँ ऐसी ही शाब्दिक अभिव्यक्ति लिए है। विज्ञान से जुड़े लेखन का लंबा अनुभव होने के चलते इस संग्रह में भी तकनीक और विज्ञान से जुड़ी कथाएँ शामिल हैं। लेखक ने अपनी बात कहते हुए लिखा भी है कि 'प्रोद्योगिकी और विज्ञान भी मेरी कहानियों में पर्याप्त है। मेरी कहानियों केवल कालबोध भर नहीं है, बल्कि ये परिवेश बोध की भी कहानियाँ हैं। यही वजह है कि उनके विषयों में जीवंत पहलुओं सार्थक रूप से अभिव्यक्त हैं'।

पुस्तक का नाम - प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियां /लेखक- प्रमोद भार्गव/ प्रकाशकः प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग,भारत,3/186 राजेंद्र नगर, सेक्टर -2 ,साहिबाबाद, गाजियाबाद - 201 005/ मूल्यः 535 रुपए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

दीपावली में कला एवं सौंदर्य का समाया है संसार

कला रंग, रेखा एवं भावों का उत्सव है हालांकि यह उत्सव हमेशा नहीं होता कभी-कभी कला के माध्यम से सामाजिक वेदना, चेतना या और भी ऐसे ही तमाम विषयों को दर्शाया जाता है पर इस बीच जब दीपावली पास हो तो दीपावली और कला पर बात करना जरूरी हो जाता है। दीपावली पर्व खुशियों का पर्व है। जगमग करते घर, गाँव और देश का पर्व है। साल भर उदासीन रहने वालों को भी चैतन्य कर देने का पर्व है। दीपावली में कला एवं सौंदर्य की छटा देखते ही बनती है। विशेष व्रत एवं तप के महीने कार्तिक में पड़ने वाले पर्व दीपावली में बचपन, पचपन एवं वृद्धावस्था सभी की सक्रिय भूमिका होती है, पहले तो और भी होती थी। हम यहाँ आज कला एवं सौंदर्य के परिप्रेक्ष्य में ही दीपावली की बात करेंगे जहाँ पहले और आज में हुए तमाम परिवर्तनों पर भी बात होगी। दीपावली में कला की उपस्थिति पर बात होगी।

सुबह सूर्य के सुनहरे प्रकाश के साथ शुरू होता दिन दीपावली के वजह से कुछ विशेष बन जाता है, पहले तो और भी विशेष बन जाता था। आज हम जो कुछ भूल रहे हैं उसी को पकड़ने का प्रयास करेंगे। दादा दादी घरों की शान हुआ करते थे उनके आशीर्वाद के साथ ही दिन की शुरुआत होती थी। ठंड कड़कड़ाती तो नहीं पर हाँ सेहलावन वाली जरूर थी, मनभावन थी। खेतों में गोबर खाद मिला चुकने के बाद आलू की मेड़ी चढ़ने का काम भी जोरो पर होता था। खाली कैनवास पर चित्र संसार रचने से पहले की जो तैयारी होती है कुछ ऐसे ही खेतों को भी तैयार किया जाने लगता था। कहीं-कहीं आलू, मूली, धनिया, लहसुन की खेती हो भी चुकी होती थी जिसकी मेड़ी किसी ग्रैफिक डिजाइन के मानिंद आंखों को सोहाती थी। कलाकार विंसेंट वॉनगॉग अनायास ही याद हो आ रहे थे फर्क बस काले कोयले और यहां सुनहरे मिट्टी का था। खेतों में लगातार अपने काम में लगे लोग कैनवास पर फिसलते रंगों की भांति नजर आ रहे होते थे। जहां उनके कार्य, उपस्थिति और रंगों के अनुरूप परिप्रेक्ष्य भी नजर आ जाता था। देवी श्री लक्ष्मी भारतीय कला में सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी के रूप में मान्य हैं जिनके पूजन का विधान भी कला से ही जुड़ा हुआ है और दीपावली में उन्हीं की पूजा भी होती है।

दादी महीनों पहले से ही बखरियों पर रंग-रोगन के कामों में लग जाती थी, पिड़ोर से गंउखा तथा डेहरियों के आसपास का क्षेत्र सजा दिया जाता था। घर के लोग विशेषतः महिलाएं ब्रश या बांस के कैनी को कूंच कर या अपने अंगुलियों से ही लोक रिवाजों को परिभाषित करते चित्र बनाने में लग जाती थीं। साल भर से स्मृतियों में सजे स्वप्न को दीवारों पर आकार मिलता था जिसको देखने भर से मन के सारे ग़म काफूर हो जाते थे। गांव कलाकृतियों वाला गांव नजर आने लगता था।

घर का निर्माण वास्तु के आधार पर होता था जहां रंगों का विधान भी कला के अंतर्गत ही निहित सा जान पड़ता था।

चारों तरफ महकते फूलों की खुश्बू फैली हुई होती थी। सिंदूरी रंग से फैली छटाओं के बीच दीवारों और पेड़ पौधों पर पसरे रंग और फैले महक को देख और सूंघ कर मन किसी अनंत यात्रा पर निकल जाता था। सफेद और गेरुआ रंग का बोलबाला होता था। कच्ची बखरी में लगे गोबरी के लेप पर रंग-रोगन किसी विशेष कलाकारी से कम नहीं होता था। अप्रशिक्षित कलाकारों की कृतियां भी प्रशिक्षित कलाकारों पर भारी होती थीं।

दादा अपने ही दुनिया में मगन रहा करते थे उनके दुनिया में भी साफ-सफाई ही रहा करती थी पर वो बखरी से बाहर मसलन गोरुवार, दलान, चबुतरा, बगइचा, चन्नी वाली दुनिया होती थी जिसमें भर दीवाली दादा मशगूल हो जाया करते थे। गाय, भैंस और बैलों को खूब रगड़ कर नहलाने के बाद उनके सींगों पर काले रंग लगा कर सुनहरे धूप में बांध दिया करते थे।

पेड़ पौधों पर भी रंग लगाया जाता था। बच्चे पूरे मन से मिट्टी के मंदिर बनाने में लग जाया करते थे। एक दूसरे में होड़ सी लगी होती थी। मंदिरों को अलग-अलग रंगों में रंगा जाता था हालांकि मिट्टी में सने होने से रंग खुलकर तो नहीं आ पाते थे पर लगते खूबसूरत थे। दोपहर होते ही नोखई चाचा मिट्टी के दियली, सुग्गा, जतोला, घंटी लिए आ पहुंचते थे, बच्चे पूरे मन से उनके इंतजार में रहते थे। साइकिल की घंटी बजते ही बच्चों की भीड़ टूट पड़ती थी। चारो तरफ से उनको घेर लिया जाता था। सभी घरों में दियली और खिलौने बांटने के बाद खूब सारे पैसों और धान, गेहूं के साथ खुशी-खुशी मन से चाचा अपने घर चले जाते थे सभी घरों में खुशियां बांटकर। मम्मी चाची घर के भीतर की सफाई के साथ ही मिट्टी के सभी बर्तनों और खिलौनों को पानी में डुबोकर रख देतीं थी ताकि ज्यादा तेल ना सोखने पाये। शाम होते ही सभी एक बार फिर अपने-अपने कामों में लग जाया करते थे। बखरी के बीच बड़े से आंगन में बड़े से परात में सजी दियलियों को

लिए दादी बैठ जाती थीं। देशी घी से दिया जलाते हुए एक थाली में दादा जी को देते हुए खेत, खरिहान, घूर, मशीन आदि पर जलाने को कहती थीं। दादा थाली लिए बाहर चले जाते थे। गोलू, भोलू, शैली, सविता दादी को घेरे अपने बारी का इंतजार करते रहते थे। एक-एक, दो-दो दिये सभी दरवाजों पर रखने का काम इन बच्चों को ही मिलता था। हर घरों से लोग सज संवर कर निकलते थे, हंसते बतियाते दीया सजाते आगे बढ़ते चले जाते थे। हर घर से एक दीया मंदिर के लिए हजारों दीये बन जाते थे। सड़क, खेत, खरिहान, मंदिर, गाँव, घर कहीं भी अंधेरा नहीं रह जाता था। जगमग रौशनी में नहायी धरा खुद पर इतराने लगती थी। सौंदर्यबोध आसमान पर होता था। मजाल कि कहीं अंधेरा छूट जाय काश कि ऐसे ही मन का अंधेरा भी जगमग हो उठे। टिमटिमाते रोशनी में एक दूसरे के चेहरों को देखना कितना सुखकर प्रतीत होता था। घरों में घंटों पूजा होती थी। ऐसी मान्यता है कि देवी देवता सभी घरों में जाते हैं इसलिए दरवाजे खुले रखे जाते थे। भगवान को प्रसाद चढ़ाने के बाद प्रेम बांटने का दौर शुरू होता था। लोग फल, फूल, प्रसाद लिए अपने अगल-बगल के घरों में जाते थे और खूब सारा प्रेम बांटकर आते थे। माहौल सुकून से भर जाता था। बच्चे पटाखों के साथ खेलते और घर में बने पकवानों को खाते हुए सो जाते थे, सभी सो जाते थे। सुबह बच्चों में जल्दी उठने की होड़ थी। जो जल्दी उठता था रात को जली सभी दियलियां बीन लाता था उसमें छिद्र कर गड़ारी बनाया जाता था जो आने वाले कुछ दिनों तक उनके खेलने और खुश रहने का साधन हुआ करता था। दादा-दादी इस बदलाव को देखकर अपने संपन्नता पर कम बल्कि अपने भरे-पूरे परिवार के संपन्नता पर ज्यादा लहालोट होते थे। घर को सजाने में थोड़ा बहुत ही सही सभी का हाथ होता था।

अभी भी है पर पहले से कुछ कम है। लोग समय को महत्व देने लगे हैं रिश्ते दरकिनार होते जा रहे हैं पर इस दिन में अभी भी वो शक्ति है कि लोगों को जोड़ सके। दीपावली दिलों को जोड़ने का त्योहार है। दीपावली में घर के साथ ही परिवार और परिवार के मन के मैल भी साफ हो जाते हैं। अब तो बच्चे मोबाइल में ही सब कुछ खेल लेना चाहते हैं बाहर निकलते हैं तो बस पटाखे फोड़ने के मन से।

मिट्टी के गौरा-गौरी सुवा नृत्य दीपावली के मूल में है। दीप, कलश, पेड़-पौधे, घर, हर जगह सौंदर्य का उत्सव बस दीपावली में ही देखा जा सकता है। शाम को जब हर घर से दीप सज-संवर कर निकलता है धरा रौशनी से नहा उठती है और खुशी से विह्वल हो जाता है हर घर और मन। दरवाजे खोल दिए जाते हैं ताकि चारों तरफ से प्रवेश कर सके खुशियां और प्रकाश आगमन हो सके माँ लक्ष्मी का। दीपावली के मूल में है कला और सौंदर्य।

प्रकृति एवं मनुष्यों के आपसी मेलभाव को दर्शाता ये महीना बहुत कुछ सिखा जाता है हम सभी को। राजा राम के अयोध्या वापसी और अयोध्यावासियों के खुशियों के गुबार से भी संबंधित है ये पर्व। घुप्प अंधेरी रात में भी जगमग दीपों से नहायी अयोध्या सोचकर ही मन कमल सा खिल उठता है।

असत्य पर सत्य के, तम पर प्रकाश के विजय को भी दर्शाता है पर्व दीपावली यानी दीपों की पंक्तियाँ। जगमग होता घर संसार। वर्ष भर से दबी पड़ी इच्छाओं का अचानक से खुल जाना, घनघोर, सघन अंधेरी रातों को भी प्रकाश-प्रकाश कर देना, कलुषित मन को पवित्र कर के रिश्तों में मिठास भर देना ये सब दीपावली के ही बस की बात है।

भाषा परिधान भले ही भिन्न हों पर उद्देश्य सभी का एक ही होता है, पूजा, सुकून और खुशियों का फैलाव। जीवन विभिन्न रंगों का संगम है जहाँ प्रमुख चाहतों में खुशियाँ हैं। दीपावली खुशियों का त्यौहार है, दीपावली रंग-बिरंगे वातावरण का त्योहार है, दीपावली खुशियों को खुलकर एक दूसरे से बांटने का त्योहार है। अंधकार पर प्रकाश की, असत्य पर सत्य की, अधर्म पर धर्म की जीत है दीपावली। दीपावली में कला का भरा-पूरा संसार समाया हुआ है। रंग खेती-बाड़ी,दीवार, हवाओं और लोगों के मन तक को रंग जाता है। दीपावली के साथ ही रंगों से सजी एक नई दुनिया सभी के समक्ष प्रस्तुत हो जाती है जो कई महीनों तक अपने होने का एहसास कराती है, एहसास जैसे ही धीरे-धीरे धूमिल होने लगता है कि फिर आ धमकती है अगले वर्ष की दीपावली

आयोजन

मोहन वर्मा

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

बेल्जियम में गूंजी देवास के भुवनेश कोमकली की स्वरलहरियां

यों तो भारतीय गायकों,संगीतज्ञों का सुदूर विदेशों में जाकर प्रस्तुति देना कोई नई बात नहीं हैं । देवास के ख्यात शास्त्रीय गायक पंडित कुमार गन्धर्व के सुपौत्र और मुकुल शिवपुत्र के सुपुत्र भुवनेश कोमकली न केवल कई बार कई कई देशों में अपने शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति दे चुके हैं बल्कि विदेशी धरती पर महत्वपूर्ण सम्मानों से नवाजे भी जा चुके है। मगर इस बार बेल्जियम के ब्रुसेल्स में स्थित यूरोपियन यूनियन पार्लियामेंट में प्रस्तुति देने का अवसर उनके लिए इसलिए भी मायने रखता है कि एक तो पहली बार किसी भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायक को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था,दूसरे यह कुमार जी का जन्मशती वर्ष है इसलिए भी बेल्जियम में भुवनेश कोमकली का गायन विशेष महत्त्व रखता हैं।

16 अक्टूबर 2024 की शाम विशेष रूप से पार्लियामेंट के सदस्यों के लिए ही आयोजित इस कार्यक्रम में सभी यूरोपियन देशों के प्रतिनिधि (लगभग 27 देशों के) शामिल हुए। नई दिल्ली की संस्था सहर इंडिया के सहयोग से भारतीय दूतावास बेल्जियम के ब्रूसेल्स में स्थित यूरोपियन यूनियन पार्लियामेंट में हुए इस गरिमामयी आयोजन में भुवनेश कोमकली ने अपने गुरुओं विदुषी वसुंधरा कोमकली और पंडित मधुप मुदगल को प्रणाम कर पंडित कुमार गंधर्व जी की सांगीतिक रचनाओं को यूरोपियन यूनियन पार्लियामेंट में प्रस्तुत कर मानवंदना की ।

इस अवसर पर ब्रूसेल्स स्थित यूरोपियन यूनियन इंडिया एसोसिएशन और द स्पेनिली ग्रुप के अध्यक्ष श्री सैंड्रो गोजी विशेष अतिथि के रूप में और यूरोपीय संघ में भारत के राजदूत श्री सौरभ कुमार कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। इस यात्रा में संगत कलाकारों के रूप में तबले पर रोहित मुजुमदार, हारमोनियम पर स्वरूप दीवान के अलावा सहगान और मंजीरे पर वर्षिता बन्सीवाल थी, जिन्हें भी मुख्य गायक भुवनेश कोमकली के साथ उपस्थित श्रोताओं की भरपूर सराहना मिली।

यहाँ यह उल्लेख समीचीन होगा कि भुवनेश कोमकली देश और विदेश में भी कई महत्वपूर्ण संगीत समारोहों में न केवल शिरकत कर चुके है बल्कि कई पुरस्कारों से भी नवाजे जा चुके हैं। उनके खाते में सवाई गन्धर्व संगीत समारोह, विष्णु दिगंबर जयंती,बंदिश समारोह,तानसेन समारोह,बैंगलोर हब्बा संगीत समारोह, संकट मोचन संगीत सम्मेलन, दुर्गियाना संगीत समारोह अमृतसर, सप्तक अहमदाबाद, शामिल हैं।

भारतीय संगीत कला और संस्कृति के प्रतिनिधि रूप में मालवा की धरती से भुवनेश कोमकली, सुदूर मॉरीशस, नेपाल,अमरीका,कनाडा और सिंगापुर जैसे देशों में जाकर अपनी स्वर लहरियों के जादू से संगीत प्रेमियों को भाव विभोर कर चुके हैं । भुवनेश कोमकली को भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा स्कालरशिप भी प्राप्त हुई है । 2009 का षण्मुखानंद शिरोमणि अवार्ड, कर्नाटक सरकार द्वारा 2010 में मल्लिकार्जुन मंसूर युवा पुरस्कार,2012 में बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार, प्राप्त करने के साथ आपने हिन्दी फिल्म देवी अहिल्या में संगीत भी दिया हैं।

इन तमाम उपलब्धियों के साथ वे लगातार देशभर में अपने गुरु पंडित कुमार गन्धर्व और श्रीमती वसुंधरा कोमकली से सीखे अपने गायन से संगीत प्रेमियों को आनंदित करते रहते है। बहरहाल मालवा की माटी देवास से सुदूर बेल्जियम के यूरोपियन यूनियन पार्लियामेंट में माननीय सांसदों के बीच प्रस्तुति के लिए भुवनेश कोमकली को बधाई और शुभकामनाएं ।

मुरझाए चेहरे खिल उठे, हर घर पहुंचे उजाला

उत्सव

नरेंद्र तिवारी

स्वतंत्र लेखक

दीपावली की उजास से मुरझाए चेहरे भी खिल उठे, हर घर में प्रगति का प्रकाश पहुंचे, दीप पर्व में छुपा यह महत्वपूर्ण संदेश हमें सामाजिक सहयोग की प्रेरणा देता है। सामाजिक सहयोग की यह भावना सिर्फ दीपावली के दिनों में ही नहीं अपितु साल के 365 दिन चलती रहनी चाहिए। आपसी सहयोग की भावना से ही समाज में समानता स्थापित हो सकती है। इसी तरह की निर्मल ओर पवित्र सहयोग की भावना का संदेश देता एक टीवी विज्ञापन जब भी देखता हूँ, मन में निर्मल ओर पवित्र सामाजिक सहयोग की भावना बलवती होने लगती है। एचपी इंडिया कंपनी द्वारा दिखाए जाने वाले इस विज्ञापन का निर्माण वर्ष 2018 में हुआ विज्ञापन में दीपावली के दौरान सड़क के किनारे बैठी एक बुजुर्ग महिला दिए बेच रही है, दीपावली की खरीदी के दौरान अपनी माँ के साथ बाजार आया

बालक अपनी माँ से दीपक खरीदने को कहता है, बुजुर्ग महिला से दिए खरीदने हेतु अनिच्छा जताती माँ अपने पुत्र के साथ आगे निकल आती है। किंतु संवेदनशील बालक अकेला आकर दीपक खरीदते हुए बुजुर्ग महिला से जब हैप्पी दीपावली कहता है तब अपने पर्याप्त दीपक न बिक पाने से निराश बुजुर्ग महिला बालक से कहती है 'काहे की हैप्पी दिवाली, जब तक यह दिए न बिक जाए' बालक बुजुर्ग महिला की मोबाइल से फोटो खींचता है, अपने लेपटॉप से बुजुर्ग अम्मा की फोटो सहित एक पोस्टर बनाता है जिसपर लिखा होता है अम्मा की दीपावली हैप्पी बनाओ, जाकर उनसे दिए ले आओ। इन पोस्टरों को अपने आसपास के घरों में ओर दीवारों पर चिपका देता है। पोस्टर देखकर, पढ़कर बुजुर्ग अम्मा के सारे दिए बिक जाते है। मुरझाया चेहरा खिल उठता है। दीपावली के दौरान भावप्रधान यह विज्ञापन समाज में सहयोग की भावना को बढ़ाता है, परस्पर सहयोग करने की प्रेरणा भी देता है। एचपी इंडिया का एक ओर भावना प्रधान विज्ञापन है जिसमें बुजुर्ग चित्रकार की पेंटिंग की दुकान महानगर के बाजार से हटा दी जाती है, तब यह बुजुर्ग कहता है, आजकल शहरों में हमारे लिए जगह नहीं रही। बुजुर्ग के मुंह से निकले उक्त कथन को एक कला पसंद संवेदनशील महिला सुन रही होती है जो किसी कंपनी की प्रमुख होती है। अपनी कंपनी के ऑफिस में दीपावली की सजावट हेतु उस बुजुर्ग की चित्रकला का उपयोग करती है। बुजुर्ग को कंपनी के ऑफिस आमंत्रित करती है। तब उक्त बुजुर्ग के चेहरे पर आने वाली खुशी निश्चित ही समाज के हर वर्ग की हैप्पी दीपावली का भावना प्रदान संदेश है। सहयोग का पाठ 2018 में बने उक्त विज्ञापन सिखाते प्रतीत होते है। भारतीय संस्कृति सनातन संस्कृति है। हमारी परंपरा के महान चरित्रों ने भी आपसी सहयोग के उदाहरण प्रस्तुत किए है। संवेदनाओं को समझा है, दारुण दुख से पीड़ित लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें कष्टों से उभारा है।

दीपावली का महान उत्सव जिस महान चरित्र के 14 वर्षीय वनवास से अयोध्या लौटने, दानवी प्रकृति से विजय होने की खुशी में सदियों से मनाया जा रहा है। वह है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जिनका संपूर्ण जीवन समानता और आपसी सहयोग की भावना को समर्पित रहा। तुलसीदास रचित रामचरितमानस में शबरी और श्रीराम के मिलन का वर्णन करती चौपाई 'सबरी देखि राम गृह आए। मुनि के बचन समुझि जियं भाए।। आरण्यकांड में श्रीराम और शबरी के मिलन का सुंदर चित्रण किया है। शबरी प्रभु राम के आगमन पर उन्हें बेर खिलाती है। बेर मीठे ही प्रभु खा पाए इसलिए हर बेर को चखकर सिर्फ मीठे बेर ही प्रभु को खिलाती है। शबरी ने प्रभु श्रीराम को बताया था कि मतंग ऋषि उन्हें यह बता चुके थे कि एक दिन सीता को खोजते हुए राम यहीं आएंगे। इस दौरान जहां सबरी ने भगवान राम को सीता जी को खोजने के लिए वानर राज सुग्रीव एवं हनुमान जी की मदद के बारे में बताया तो श्रीराम ने शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया था। सबरी ओर राम की यह मुलाकात दक्षिण-पश्चिम गुजरात के डांग जिले के सुबीर गांव के पास सबरी धाम में होने की जनश्रुति चली आ रही है। वनवासी सबरी ओर श्रीराम की मुलाकात का यह प्रंसग मानवीय जीवन की कोमल भावनाओं का प्रकटीकरण है। इसी तरह के निर्मल भाव केवट और राम की मुलाकात में भी नजर आते है। कोमल, निर्मल ओर पवित्र भावनाओं के अनेकों प्रसंग श्री राम के जीवन से जुड़े है। भारतीय समाज के एक ओर नायक श्री कृष्ण के जीवन से जुड़े अनेकों प्रसंग दुनियां का मार्ग दर्शन कर रहे है, किंतु सुदामा और श्रीकृष्ण की मित्रता की कहानी दोस्ती की अमिट यादगार और प्रेरणादाई प्रसंगों में दर्ज हो गई। जब भी ईमानदार मित्रता की चर्चा होती है। कृष्ण-सुदामा दोस्ती का यह प्रंसग बरबस जहन में आ जाता है।

सदियों से चले आ रहे कोमल, पवित्र और मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण यह प्रसंग संपूर्ण विश्व के मार्गदर्शक सूत्र के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे है। किंतु जब धन, पावर, सत्ता का नशा व्यक्ति के सर चढ़कर बोलने लगता है, निजी स्वार्थों से वशीभूत होकर व्यक्ति इन कोमल भावनाओं के प्रतिकूल जाकर कार्य करने लगते है। भावनाओं की प्रतिकूलता व्यक्ति के जीवन को नकारात्मकता प्रदान करती है। यहीं नकारात्मकता धन, संपदा, सत्ता, ताकत के घमंड को तोड़ती है।

दीपावली के महान सनातनी पर्व पर दया, करुणा, सेवा की भावनाओं का प्रदर्शन होना चाहिए। देखने में आता है कि इन्हीं पवित्र भावनाओं से प्रेरणा पाकर अनेकों संस्थाएं, संगठन और व्यक्ति दिन दुखियों के चेहरों पर मुस्कुराहट लाने के प्रयास में जुटे रहते है। वर्ष 1966 में बनी फिल्म बादल का यह खूबसूरत गीत 'अपने लिए जिए तो क्या जिए, ऐ दिल जी तू जमाने के लिए, गीतकार मन्नाडे द्वारा गाया यह गीत भी इन्हीं कोमल और पवित्र भावनाओं का प्रतिनिधि गीत है। मनुष्य का जीवन सदैव एकसा नहीं रहता है, उतार-चढ़ाव, सुख-दुख सभी के जीवन का हिस्सा है। खराब और बुरे दौर में आपके द्वारा किया गया सहयोग, प्रेम के बोल, प्रकट संवेदनाएं बल देती है। व्यक्ति फिर से खड़े होकर लड़ने को तैयार होता है, अपने बुरे दौर को हराने के प्रयास में जुट जाता है। दुनियाँ को प्रकाशित करने वाली इन भावनाओं का दीपों के इस पर्व पर भी भरपूर उपयोग करें। सबकी दीपावली हैप्पी हो, सुदूर बस्ती की झोपडी भी प्रकाशित हो, मुरझाए चेहरे खिल उठे, हर घर पहुंचे दीपक का प्रकाश। यही तो है दीपावली का असली संदेश।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

हास्य के अन्तर्प्रवाह के साथ संवेदनशील मुद्दों की प्रस्तुति

वेब सिरीज़ - 'रात ज़वान है' तीन दम्पतियों की कहानी है । तीन बचपन के दोस्त उनकी पत्नियां और उनके तीन बच्चे । कुल जमा नौ चरित्रों की इस वेबसिरीज में कहानी की अच्छी बुनावट है जो हास्य के अन्तर्प्रवाह के साथ संवेदनशील विषयों को भी बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। कहानी बिंदास राधिका (अंजलि आनंद), पिता बनने के बाद कॉरपोरेट नौकरी छोड़कर बच्चा पाल रहे कूल ड्यूड अविनाश (बरुन सोबती) और परिवार को पहले रखने वाली समझदार सुमन (प्रिया बापट) की है। ये तीनों बचपन के दोस्त हैं, जो घर-गृहस्थी और बच्चों की जिम्मेदारियों के बीच अपनी दोस्ती, शौक और सपनों को जिंदा रखे हुए हैं। हालांकि, अपनी पसंदीदा फिल्म देखने से लेकर अपने पार्टनर के साथ अंतरंग पल बिताने जैसी छोटी-छोटी ख्वाहिशों के लिए इन नए-नवेले माँ-बाप यानी तीनों दम्पतियों को जिस तरह जद्दोजहद करनी पड़ती है, उससे हर नवदम्पती खुद को जुड़ा समझेंगे ।

तऊन पीढ़ियों की इस वेबसिरीज में अभिनय के मामले में बरुण सोबती अव्वल नम्बर हैं। दोबारा नौकरी करने के फैसले के बाद अपने दुधमुंहे बेटे के साथ जो उनका आत्माला (मोनोलॉग) है, वह सिरीज का सबसे सटीक दृष्य है। हर पिता यही चाहता है कि बेटा उसका जिस कॉलेज के नाम पर उँगली रख दे, वह उसे वहाँ पढ़ा सके। और, बाप की ख्वाहिश क्या है, यही कि बेटा जब पहली बार कुछ बोले या पहली बार अपने पैरों पर चलना शुरू करे तो वो लम्हा वह अपने साथ बनते हुए देख सके। राधिका के रोल में अंजलि ने सिरीज की कहानी के एंकर का काम किया है। बेटी के स्कूल टीचर की तारीफ करने पर खुद को वैसा ही बनाने के बाद स्कूल जाने की उसकी कोशिश वाला दृश्य सुंदर है। सुमन के किरदार में प्रिया बापट सौ फीसदी मराठी मुलगी हैं। चंद्रू और मंजू वाले उसके दृश्य उच्च मध्यमवर्गीय परिवारों की बिल्कुल सटीक तस्वीर पेश करते हैं।

तीन दोस्तों का ये मस्त थ्रीसम है। सेक्स और अश्लीलता

बिल्कुल नहीं हैं। हां, गालियां कम होतीं और नाम थोड़ा बेहतर होता तो और अच्छा होता ।

ख्याति की यह पहली कहानी है, जिसके चलते इसमें बिना किसी मेल-मिलावट वाली ताजगी है। पटकथा कसी हुई है और डायलॉग्स सटीक हैं। हाँ गालियां थोड़ी कम रखते तो इसके ऑडियंस का फलक ज्यादा बड़ा हो सकता था। बात करें डायरेक्शन की तो शॉर्ट फिल्म हेयरकट और मिनी सीरीज टंकेश डायरीज के जरिए निर्देशन में हाथ आजमाने वाले ऐक्टर सुमित व्यास भी पहली बार फुल फ्लेज्ड निर्देशन में उतरे हैं और इस पहली ही पारी में उन्होंने चौतरफा छक्के जड़े हैं। वहीं, ऐक्टिंग के मामले में भी अंजलि, बरुन और प्रिया तीनों ने सहज, सुंदर और शानदार काम किया है।

येकोहरा के गंभीर रोल के बाद मॉडर्न हाउस हज्बैंड अविनाश के रूप में बरुन के ऐक्टिंग की रेंज देखने लायक है, तो बेधड़क, मुंहफट राधिका के रूप में अंजलि परफेक्ट हैं। इन तीनों की केमिस्ट्री सीरीज की जान है। इन सबके साथ जय आई पटेल की सिनेमटोग्राफी, ट्विशा पाल के प्रॉडक्शन डिजाइन, अनुराग सैकिया के बैकग्राउंड स्कोर और नम्रता राव की कड़क एडिटिंग ने इसे बिंज करने लायक बढ़िया सीरीज बनाया है, जिसे आप अने वीकेंड का हिस्सा बना सकते हैं।

ट्विसा पाल के दृष्य् संयोजन बेहद आकर्षक है । प्रोडक्शन डिजाइनर के रुप में पाल ने सिरीज का हर फ्रेम बहुत करीने सँजोया है। लोकेशन चुन चुनकर रखी हैं। आखिरी एपीसोड का आखिरी सीन जिस तरह से दक्षिण मुंबई की सुबह की सुनसान सड़कों पर तीनों मुख्य किरदारों के नाइट ड्रेसेज के साथ शूट किया गया है, वह काबिले तारीफ है। और, इसमें बराबर की मेहनत की है सिरीज के सिनेमैटोग्राफर जय आई पटेल ने। जय का कैमरा दर्शकों को पहले एपीसोड से ही कहानी का हिस्सा बनाने में कामयाब रहा है। अनुराग सैकिया ने कहानी का टोन बिल्कुल सही पकड़ा है, उनका संगीत भी इस सिरीज में किसी किरदार से कम नहीं है। नम्रता राव ने हर एपिसोड की अवधि कहानी की प्रगति के हिसाब से दुरुस्त रखी है और इसे कहीं भी शिथिल नहीं पड़ने दिया है। शुरू के एपीसोड में अनावश्यक गाली-गलौज न हो और इसकी मार्केटिंग थोड़ी और झन्नाटेदार हो तो ये सिरीज सीजन की बेस्ट सीरीज होने का माद्दा रखती है।

सतपुड़ा संकुल ने जीता तीन गोल्ड, एक सिल्वर और कांस्य पदक

घोड़ाडोंगरी/ बैतूल। मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड की टीम ने भोपाल संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में सम्मिलित होकर 5 पदक जीते। मध्य प्रदेश श्रम कल्याण मंडल भोपाल के तत्वावधान में रविंद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी में भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग के लगभग 400 खिलाडियों ने भाग लिया। जिसमें सतपुड़ा ताप विद्युत गृह के धर्मेंद्र खेर ने 100 मी. 1500 मी. और लॉग जंप में गोल्ड मेडल अपने नाम किया। दिनेश मेवाड़ा ने गोला फेंक में कांस्य पदक जीता, वही रस्सा खींच में सारनी टीम उपविजेता रही और रजत पदक जीत कर संतोष करना पड़ा। संकुल के खिलाड़ियों ने संभाग प्रतियोगिता में पहली बार भाग लेने के बाद भी उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए खेल भावना का परिचय दिया। पावर प्लांट के मुख्य अभियंता वीके कैथवार ने मुख्य अभियंता कार्यालय में खिलाडियों को बधाई देते हुए हर संभव सहयोग देने की बात कही। इस अवसर स्पोर्ट्स कमेटी के सचिव एसएन सिंह, उल्लास देशमुख और सुनील थंक्कापन भी उपस्थित रहे। रघुनाथ देशमुख, नवीन पटेल, धर्मेंद्र खेर, विवेक मरकाम, दिनेश मेवाड़ा, अमित चौरे, शीतल कुमार, चंचलेश और राहुल चौकसे आदि खिलाडियों ने सतपुड़ा ताप विद्युत गृह को गौरवान्वित किया है।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आज

बैतूल। ओम आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल भारत-भारती द्वारा कलेक्ट्रेट रोड स्थित शहीद भवन में आज 27 अक्टूबर को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में ओम आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के विशेषज्ञ चिकित्सकों व दत्ता मेघे आयुर्विज्ञान संस्थान के आचार्य विनोबा भावे ग्रामीण अस्पताल वर्धा से विविध विभाग के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा रोगियों की स्वास्थ्य जांच कर उचित मार्गदर्शन व चिकित्सा परामर्ष दिया जायेगा। इस शिविर मे प्रायः सभी प्रकार के बीमारियों का इलाज एलोपैथी एवं आयुर्वेद दोनों चिकित्सा पद्धति से होगा। इस शिविर में बवासिर, गुदविकार, हाइड्रोसिल, हर्निया, शरीर पर किसी प्रकार की गांठ, पेशाब में जलन, मोतियाबिंद, तिरछी नजर, स्त्रीयो में महावारी संबंधित रोग आदि अनेक रोगों की जांच एवं चिकित्सा की जायेगी। शिविर में पूर्व में हुये शिविर के मरीज भी अपनी जांच करवा सकते है। ओम स्वास्थ्य एवं शिक्षा परिषद संस्था ने जिले के मरीजों से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाने की अपील की है।

शिक्षक की मेहनत, ग्राउंड में अब खेल सकेंगे बच्चे

- स्वयं के व्यय पर स्कूल का खेल ग्राउंड कराया तैयार

बैतूल। शिक्षक किताबों के ज्ञान से हटकर भी अपनी सोच व लगन से स्कूल व समाज के हित में बहुत कुछ परिवर्तन कर सकता है। वह समाज व राष्ट्र के निर्माण में नीव के पत्थर के रूप में कार्य करता है सही सोच व निष्ठा के साथ कार्य करने का जुनून हो तो सब संभव हो जाता है। ऐसा ही मामला एकीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ढोडवाडा में पदस्थ शिक्षक मदनलाल डढोरे अपने शिक्षकीय कार्य के अलावा समाज सेवा के लिए जाने जाते है। वे छात्रों के हित के लिए निष्ठा के साथ जुनून की हद तक कार्य करके छात्रों एवं अभिभावकों की प्रशंसा बंटोरते है। ढोडवाड़ा विद्यालय में बरसात के दिनों में पानी भरा होने के कारण कीचड़ हो गया था। कीचड़ के चलते बच्चे चार माह नहीं खेल पा रहे थे। भारी परेशानी होती थी व शिक्षकों को भी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। शिक्षक डढोरे ने समस्या देखी और परखी तो तत्काल स्वयं के व्यय पर खेल ग्राउंड में गिट्टी , बजरी व मुरूम डलवा कर खेल ग्राउंड की कायाकल्प कर दी, जिससे अब बच्चे अच्छे से खेल पा रहे हैं। शिक्षक मदनलाल डढोरे के इस कार्य को शिक्षक राजेंद्र प्रसाद बेले व गांवपटेल कृष्णा राव खाड़े व कैलाश पवार ने सराहनीय बताया व प्रशंसा की।

शहर की मिष्ठान दुकानों का किया निरीक्षण

- शुद्धता और सफाई रखने के दिये निर्देश

बैतूल। आगामी त्योहारों पर मिलावटी मिठाईयां बाजार में न बिके, इसे लेकर पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया के निर्देशन में मिलावटखोरों एवं अवैधानिक कार्य करने वालों पर सख्त कार्यवाही की जा रही है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी के सहयोग से थाना प्रभारियों को कार्रवाई के लिए निर्देशित किया है, ताकि पर्वों के दौरान लोगों को शुद्ध एवं स्वच्छ खाद्य पदार्थ उपलब्ध हो सकें। इसी क्रम में पुलिस थाना कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत लल्ली चौक के पास स्थित अन्ना हॉट चिप्स की नमकीन दुकान, बीकानेर मिष्ठान भंडार और मुरैना की शाही गजक की दुकान पर खाद्य पदार्थों का निरीक्षण संदीप पाटिल (खाद्य सुरक्षा अधिकारी बैतूल) एवं योगेश (सहायक खाद्य सुरक्षा अधिकारी) द्वारा थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक देवकरण डेहरिया द्वारा कर पंचनामा की कार्रवाई की गई। दुकानदारों को दीपावली के अवसर पर खाद्य पदार्थों की शुद्धता एवं स्वच्छता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। इधर पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया ने जिले के सभी खाद्य/मिष्ठान दुकानदारों से अपील की है कि त्योहार पर खाद्य सामग्री की गुणवत्ता बनाए रखें। यदि किसी भी प्रकार की मिलावट या अस्वच्छता पाई जाती है तो कठोर विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी।

मंडी में बढ़ी मक्के की आवक, सोयाबीन लेकर भी पहुंचने लगे किसान

5 दिन में लगभग 60,000 बोरा मक्के की आवक, सोने जैसी चमक रही कृषि मंडी

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले की कृषि उपज मंडी बडोरा में मक्का की भारी आवक बनी हुई है। पिछले पांच दिनों के भीतर मंडी में 8 से लेकर 15 हजार बोरे तक मक्का प्रतिदिन पहुंच रही है। इसके साथ ही सोयाबीन, गेहूं की आवक भी बनी हुई है। मक्का के अधिकतम दाम लगभग 2374 से 2189 प्रति क्विंटल, न्यूनतम 1701 रुपए तक मिल रहा है। अगले सप्ताह धनतेरस और दीपावली का त्यौहार मनाया जाएगा।

त्यौहार में खरीदारी के लिए मंडी में आवक ज्यादा हो रही है। इसके साथ ही किसान बोवनी की तैयारी में लगे हैं। खाद बीज की खरीदारी चल रही है। मंडी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इस समय मक्का की आवक ज्यादा बनी हुई है। इसके अलावा पीला सोयाबीन, चना, गेहूं, सरसों सहित अन्य उपज की भी कृषि मंडी में आवक है। पिछले पांच दिनों के आंकड़ों पर नजर डाली जाये तो कृषि उपज मंडी में 21 अक्टूबर से लेकर 25 अक्टूबर तक लगभग 59742 क्विंटल मक्के की आवक रही। हालांकि इस दौरान मक्के के अधिकतम और न्यूनतम दामों में उतार-चढ़ाव बना रहा, लेकिन दामों के उतार-चढ़ाव का असर मंडी में खरीदी पर नहीं पड़ रहा है। दिनोंदिन आवक बढ़ने से मंडी परिसर में हर तरफ पीला सोना मक्का नजर आ रही है। कृषि उपज मंडी बडोरा में उपज की आवक को लेकर मंडी सचिव से चर्चा करनी चाही, लेकिन उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

पिछले एक सप्ताह में यह रही मक्का की आवक

कृषि उपज मंडी बडोरा में पिछले पांच दिनों के भीतर लगभग 59742 बोरे मक्के की आवक रही। 21 अक्टूबर को मंडी में 9991 क्विंटल मक्के की खरीदी हुई। इसी तरह 22 अक्टूबर को मक्के की आवक में थोड़ी कमी देखी गई। मंडी में 8570 बोरे मक्का खरीदा गया। 23 अक्टूबर को 10956 और 24 अक्टूबर को 14824 बोरे मक्का मंडी में खरीदा गया। जबकि सबसे अधिक 25 अक्टूबर को 15401 बोरे मक्का की आवक रही। इसके अलावा सोयाबीन की आवक भी मंडी में शुरू हो गई है। 21 अक्टूबर को 1037 बोरे, 22 अक्टूबर 768 बोरे, 23 अक्टूबर 1293 बोरे, 24 अक्टूबर 774 बोरे और 25 अक्टूबर को 1174 बोरे सोयाबीन की खरीदी हुई।

सोयाबीन के दामों को लेकर असमंजस में किसान : मक्का के साथ ही मंडी में सोयाबीन की आवक भी शुरू हो चुकी है। लेकिन सोयाबीन के दामों को लेकर किसान अभी असमंजस में है। किसानों का कहना है कि समर्थन मूल्य में अच्छे दाम मिलने की उम्मीद है, जबकि कृषि उपज मंडी में लगभग 4502 से लेकर 4200 रूपये और न्यूनतम भाव 3400 रूपये सोयाबीन बिक रहा है। ऐसे में किसान यदि अभी सोयाबीन बेचता है तो उसे नुकसान उठाना पड़ सकता है। इधर मक्का बेचने आये किसानों ने बताया कि आने वाले दिनों में दीपावली जैसा बड़ा त्योहार है। साथ ही लोगों से उधारी में काम कराया है, उनके पैसे चुकाने हैं, इसलिए मजबूरी में अपना अनाज कम दाम में बेचना पड़ रहा है।

रबी फसल की तैयारी में जुटे किसान : किसान रबी फसल की तैयारी में जुट गये है। कहीं-कहीं किसानों ने खेत बनाने और बुआई का कार्य भी प्रारंभ कर दिया है। वैसे जिले में रबी फसल को देते हुए डीएपी यूरिया और बीज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने की बात कही जा रही है। किसानों का कहना है कि उपज बेचने के बाद ही नई फसल की तैयारी में जुट गए हैं। रबी फसल के लिए खाद, बीज, यूरिया की खरीदी भी करना है। जिसके लिए किसान अपनी उपज बेचकर पैसे जुटा रहे है, ताकि समय पर रबी फसल की बुआई कार्य प्रारंभ कर सके। इधर समर्थन मूल्य में सोयाबीन खरीदी के लिए प्रशासन ने भी खरीदी केन्द्र बनाए है।

बारिश से खेतों में जलभराव, सब्जियों के बढ़े दाम

विगत दिनों हुई बारिश का असर सब्जियों के दामों पर पड़ा है। बारिश की वजह से खेतों में लगी सब्जियों पर दाग लग गये, कहीं-कहीं खेतों में जलभराव के कारण सब्जियां खराब हो गई। जिससे किसानों को तो नुकसान उठाना पड़ा ही है, साथ ही इसका असर आम लोगों के बजट पर भी पड़ा है। बैतूलबाजार के सब्जी व्यापारी गुड्डा राठौर ने बताया कि कुछ दिनों पहले टमाटर 20 रुपये किलो हो गया था, लेकिन अब फिर से टमाटर के भाव ने रफ्तार पकड़ ली है। टमाटर 60 रुपये प्रति किलो से ऊपर पहुंच गया है। इसके अलावा भिंडी 80 किलो, बरबटी-80 रुपये प्रति किलो, भट्टे, भाजी, हरी मिर्च, धनिया सहित अन्य सब्जियों के दामों में भी बढ़ोतरी देखी जा रही है।

सतपुड़ा वैली स्कूल ने जीता इंटर स्कूल टूर्नामेंट

सेंट टेरेसा और सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल के मध्य खेला गया फाइनल मुकाबला

बैतूल। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वाधान में सेंट टेरेसा स्कूल के सहयोग से लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आयोजित इंटर स्कूल टूर्नामेंट का फाइनल शनिवार 26 अक्टूबर को सेंट टेरेसा स्कूल और सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल के मध्य खेला गया। टूर्नामेंट की शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि एसडीओपी पुलिस शालिनी पलस्ते ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल ने हिमांशु चढ़ोकार के 65 रन और विनीत के 43 रनों की बदौलत निर्धारित ओवर में 173 रन बनाएं। साहिल कवड़े दक्ष और यश ने एक-एक विकेट लिया। 174 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी सेंट टेरेसा स्कूल की टीम ने अभिमन्यु तोमर के 72 तथा साहिल कवड़े के छीने 38 रनों की बदौलत निर्धारित ओवर्स में 141 रन ही बना सकी। अंत में समर तिवारी ने तेजी से 26 रन बनाए परंतु सेंट टेरेसा स्कूल 32 रनों से मैच हार गई। टूर्नामेंट में मैन ऑफ द मैच हिमांशु चढ़ोकार मैन ऑफ द सीरीज अभिमन्यु तोमर को दिया गया

पुलिस लीजेंड ने जीत दर्ज की

स्मृति कप 24 अधिकारी कर्मचारी टूर्नामेंट का पहला मैच पुलिस लीजेंड और प्रशासन 11 के मध्य खेला गया। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव अनिल दीक्षित ने बताया कि पुलिस लीजेंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 244 रन बनाए। आदर्श दुबे और हेमंत नंदा ने तेज शुरुआत

दी। आदर्श दुबे ने 8 बॉल पर 5 चौके 1 छक्के की सहायता से 26 रन बनाएं जबकि एक छोर हेमंत नंदा ने संभाल रखा था। हेमंत ने 70 रनों की पारी खेली। इसके बाद दो विकेट जल्दी गिर जाने पर मनोज दहीकर ने मोर्चा संभाला और 27 बॉल पर 5 चौके और पांच छक्कों की मदद से 59 रन बनाए जबकि आर्यन ने 31 रनों का योगदान दिया। प्रशासन 11 की ओर से राहुल राठौर, पंकज पुण्डे, नमन मालवीय ने विकेट लिए। 245 रनों के भारी भरकम लक्ष्य का पीछा करने उतरी प्रशासन 11 की टीम दबाव को झेल नहीं पाई और लगातार विकेट गिरते चले गए। 20 ओवर में प्रशासन 11 ने 150 रन ही बना सकी। अतुल श्रीवास्तव ने 2 छक्के 7 चौकों की मदद से 51 रन बनाए जबकि नरेंद्र ठाकुर ने 30 रन बनाए। मनोज दहिकर को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ नितिन देशमुख ने बताया आज 27 अक्टूबर को दो मैच खेले जाएंगे। पहला मैच पटवारी 11 और व्यापारी 11 तथा दूसरा मैच शिक्षक 11 और पुलिस लीजेंड्स के बीच होगा।

अवैध कटाई की शिकायत पर औचक निरीक्षण करने पहुंचे आईजी और कमिश्नर

जंगल में दिखे अवैध कटाई के ताजा ठूंठ

बैतूल। अवैध सागौन कटाई की शिकायत पर नर्मदापुरम संभाग के कमिश्नर केजी तिवारी और पुलिस महानिरीक्षक इरशाद वली ने अचानक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सीसीएफ वासु कनौजिया, पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन झारिया, कलेक्टर बैतूल नरेंद्र सूर्यवंशी तथा जिला पंचायत सीईओ अक्षत जैन भी मौजूद रहे। अवैध कटाई को रोकने के लिए पुलिस, प्रशासन तथा वन विभाग की एक संयुक्त टास्क फोर्स का गठन भी किया गया है व इसमें सभी की जिम्मेदारी भी निर्धारित की गई है। दरअसल भैंसदेही विकासखंड के जंगलों में सागौन की अवैध कटाई की लगातार शिकायतें मिल रही थी। इन शिकायतों को दृष्टिगत रखते हुए नर्मदापुरम संभाग के पुलिस महानिरीक्षक इरशाद

वली, कमिश्नर केजी तिवारी ने अचानक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को तालाब के निकट जंगल में अवैध कटाई के अनेक ताजा ठूंठ दिखाई दिए, जिससे मामले की गंभीरता का अंदाजा लगाते हुए अधिकारियों ने तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। आयुक्त श्री तिवारी ने वनग्राम साकली में आयोजित चौपाल में ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और उन्हें अवैध कटाई रोकने में प्रशासन का सहयोग करने की सलाह दी। उन्होंने ग्रामीणों को शासन की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर एसडीएम भैंसदेही, तहसीलदार भैंसदेही, और अन्य विभागों के अधिकारी भी उपस्थित थे।

मध्य रेल नागपुर के डीआरएम ने किया रेलवे स्टेशन का निरीक्षण

बैतूल। मध्य रेल नागपुर के डीआरएम ने बैतूल रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने बैतूल के गुड्स शेड को शहर से बाहर करने की बात कही है। साथ ही अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 2025 के मार्च तक बैतूल स्टेशन का कायाकल्प किए जाने का भरोसा दिया है। डीआरएम मनीष अग्रवाल और सीनियर डीसीएम अमन मित्तल ने माल भाड़े के लिए बनाए गए गुड्स शेड का निरीक्षण किया। माचना ब्रिज तक गए, जहां उन्होंने पटरियों के प्वाइंट्स का निरीक्षण किया। बैतूल रेलवे स्टेशन पर पहुंचकर डीआरएम ने रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं और प्रबंधकीय

कार्यों को देखने के बाद रेलवे अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने तीसरी लाइन के निर्माण कार्यों पर भी संतोष जताया। अमृत भारत स्टेशन के तहत चल रहे निर्माण में देरी के लिए ड्राइंग डिजाइन के बार-बार बदलने को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि निर्माण कार्य समय सीमा में ही चल रहे है। मार्च 2025 तक स्टेशन का रेनोवेशन पूरा हो जायेगा। उन्होंने यहां प्लेटफॉर्म पर नियुक्त दो कैंटीन की जांच की। प्लेटफॉर्म्स पर लगे बोर्ड देखे और एसएस कक्ष, डिप्टी एसएस के कक्ष का निरीक्षण किया। सफाई व्यवस्था और फुड क्वालिटी पर संतोष जताया।

बैतूल को मिली 2700 करोड़ की सड़क परियोजना को स्वीकृति

संजय द्विवेदी, बैतूल। केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्यमंत्री और बैतूल सांसद दुर्गादास उईके के निरंतर प्रयासों से बैतूल को 2700 करोड़ से अधिक राशि की विभिन्न सड़क परियोजनाओं की स्वीकृति मिली है। श्री उईके द्वारा बैतूल भोपाल फोरलेन सडक़ निर्माण को प्राथमिकता पर रखते हुए केंद्रीय सडक़ परिवहन मंत्री नितिन गडकरी तथा एनएचएआई एवं सडक़ परिवहन विभाग के विभिन्न अधिकारियों से निरंतर अपने पूर्व कार्यकाल से ही पत्राचार एवं भेंट कर सडक़ निर्माण के लिए कोशिश की जा रही थी। अब केंद्र सरकार में मंत्री बनने के बाद श्री उईके ने पुनः नितिन गडकरी

से भेंट कर बैतूल-भोपाल फोरलेन तथा क्षेत्र को अन्य विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ने के लिए सड़क़ निर्माण की मांग की गई। सडक़ एवं परिवहन मंत्रालय के द्वारा बैतूल में 2700 करोड़ से अधिक राशि के विभिन्न सडक़ मार्ग, जिसमें बैतूल भोपाल नेशनल हाइवे के

बरेठा घाट (एनएच 46) इटारसी बैतूल सेक्शन में टाइगर कॉरिडोर के 20 किलोमीटर हिस्से के 4 लेन सड़क़ निर्माण की लागत राशि 550 करोड़ रुपए, बैतूल खंडवा सेक्शन (एनएच 347बी) बैतूल से मोहदा (90 किमी) तथा मोहदा से बाराकुंड तक 2 लेन प्लस पावर्ड सेक्शन का निर्माण की लागत राशि 1200 करोड़, बैतूल खंडवा पैकेज 4 एनएच 347बी की 33 किमी लंबी परियोजना सडक़ निर्माण की लागत राशि 381 करोड़ रुपए और बैतूल परतवाड़ा एनएच 548सी की 62.16 किमी की लागत राशि 580 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्रदान की गई। इन नवीन स्वीकृतियों से जल्द ही बैतूल भोपाल फोरलेन कार्य पूर्ण होगा तथा क्षेत्र को अन्य नवीन राजमार्गों की सौगात भी मिलेगी। इन नवीन एवं अत्यावश्यक सडक़ निर्माण की स्वीकृति प्रदान करने के लिए केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री दुर्गादास उईके तथा विधायक गण हेमंत खंडेलवाल, महेंद्र सिंह चौहान, चंद्रशेखर देशमुख, डॉ. योगेश पंडाग्रे तथा श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उईके ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं केंद्रीय सडक़ एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का आभार व्यक्त किया है।

टीवी पर 6 साल बाद 'सीआईडी' की वापसी

टीवी जगत के बहुचर्चित शो के बारे में जिक्र किया जाए तो उसमें निर्देशक बीपी सिंह के स्पाई शो 'सीआईडी' का नाम जरूर शामिल होगा। करीब 20 साल तक इस सीरियल ने हर घर के कौने तक परिवार का मनोरंजन किया है। ऐसे में सीआईडी के प्रशंसकों की तादाद भी काफी ज्यादा है। अब इस शो को चाहने वालों के लिए एक बड़ी खुशखबरी सामने आ रही है। मेकर्स ने 'सीआईडी' की नई सीरीज का ऐलान कर दिया गया है। साथ ही यह भी बताया कि सीआईडी का पहला प्रोमो कब आएगा।

'सीआईडी' की शुरुआत 1998 में सोनी टीवी पर हुई थी। 2018 तक इस शो ने नॉन स्टॉप दर्शकों को एंटरटेन किया। जिसके दम पर 'सीआईडी' एक कल्ट धारावाहिक बन गया। इसकी कास्ट जैसे एसीपी प्रद्युमन और दया के बारे में आज भी लोग जिक्र करते हैं। अब ये जिक्र फिर से बढ़ने वाला है। क्योंकि, 6 साल के अंतराल के बाद 'सीआईडी' सोनी टीवी पर वापसी करने जा रहा है। सोनी टीवी ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर 'सीआईडी' के नए सीजन का पहला वीडियो शेयर किया। जिसमें आपको एसपी प्रद्युमन (शिवाजी साटम), इंस्पेक्टर दया (दयानंद शेट्टी) और सीनियर इंस्पेक्टर अभिजीत (आदित्य श्रीवास्तव) की झलक देखने को मिलती है।

इस छोटे से प्रोमो वीडियो के साथ-साथ ये जानकारी भी दी गई है कि 'सीआईडी' की अगली सीरीज का फर्स्ट प्रोमो वीडियो 26 अक्टूबर को सोनी टीवी पर लॉन्च किया हुआ। पोस्ट के कैप्शन में लिखा है अपने कैलेंडर को मार्क कर लीजिए, 26 अक्टूबर को एक धमाकेदार प्रोमो वीडियो ड्रॉप किया जाएगा। इस अनाउंसमेंट के बाद फैंस की एक्साइटमेंट काफी बढ़ गई।

जिस तरह से रामानंद सागर के माइथोलॉजिकल शो 'रामायण' और बीआर चोपड़ा की 'महाभारत' को छोटे पर्दे का कल्ट धारावाहिक माना जाता है। उसी आधार पर 'सीआईडी' को भी वो दर्जा हासिल है। हर एक एपिसोड में एक रोचक केस के सस्पेंस की गुत्थी को 'सीआईडी' की टीम सुलझाती है, जिसको देखना फैंस को काफी पसंद आता था। उम्मीद है कि आने वाले सीजन में इस स्पाई थ्रिलर टीवी शो में और अधिक सस्पेंस देखने को मिलेगा।

सीरियल में एसीपी प्रद्युमन का किरदार निभा चुके शिवाजी साटम को बॉलीवुड और टेलीविजन इंडस्ट्री में काम करते हुए काफी वक्त हो चुका है। उन्होंने साल 1988 में अपने करियर

की शुरुआत की थी। संजय दत्त की 'वास्तव' से लेकर अनिल कपूर तक की 'नायक' में उन्होंने अहम किरदार निभाए।

हालांकि, जो पहचान उन्हें 'सीआईडी' में एसीपी प्रद्युमन के किरदार ने दिलाई, वो उन्हें हिंदी सिनेमा भी नहीं दिला पाया। आज भी उनका ये किरदार फैंस के दिल में बसा है। शिवाजी साटम लगातार अपने फैंस को पर्दे पर एंटरटेन कर रहे हैं। उनकी वेब सीरीज 'मर्डर इन माहिम' जियो सिनेमा पर रिलीज हुई है, इसके अलावा वह मराठी फिल्मों में भी काम कर रहे हैं। शो में हम देख चुके हैं कि किस तरह से एसीपी प्रद्युमन अपने शातिर दिमाग से हर केस की गुत्थी को सुलझा देते थे।

'सीआईडी' में सबसे महत्वपूर्ण किरदारों में से एक किरदार दया का था, जो उस शो के बाहुबली थे। एक ही झटके में किसी भी दरवाजे को तोड़कर अपराधी को पकड़ लेते थे। जब उनका हाथ गले तक पहुंचता था, तो कोई भी थर-थर कांपने लगता था। इस किरदार को दयानंद शेट्टी ने निभाया था। शिवाजी साटम की तरह ही दयानंद शेट्टी भी फिल्मों में एक्टिव हैं और जल्द ही वह रोहित शेट्टी की सिंघम अगेन में दिखाई देंगे।

एसीपी प्रद्युमन के अलावा अगर सीआईडी में किसी कैरेक्टर की इन्वेस्टीगेटिव स्किल्स सबसे अच्छी थी, तो वह थे अभिजीत। इस किरदार में अभिनेता आदित्य श्रीवास्तव ने जान फूंकी थी। उनका ये किरदार लोगों को आज भी याद है। अपने दोनों साथियों की तरह वह भी फिल्मों में लगातार एक्टिव हैं। नेटफ्लिक्स पर उनकी फिल्म भक्षक कुछ महीने पहले ही रिलीज हुई थी। अब वह अपने दोस्त दया के साथ यूट्यूब पर एक ट्रेवल सीरीज लेकर आए हैं।

सीआईडी में एक और किरदार ऐसा था, जिसने अपनी कॉमेडी से लोगों को हंसाया, लेकिन उनकी पैनी नजरों से कोई बच सके, ये तो सवाल ही नहीं उठता। डॉ सालुंके का किरदार अदा करने वाले नरेंद्र गुप्ता को इस शो में काफी पसंद किया गया था।

रियल बॉक्स

परदे पर अब नहीं होते दिवाली के धमाके

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी सिनेमा के पर्दे पर भी दिवाली का उजास कथानकों और गीतों से अनछुआ नहीं रहा! कुछ फिल्मों के गीतों व दृश्यों में दिवाली काफी अहम रही! कभी कथानक के महत्वपूर्ण दृश्य दिवाली की पृष्ठभूमि पर फिल्माए गए, तो कभी गीतों में दिवाली का उजास, खुशियां और भव्यता स्पष्ट दिखाई दी। सिनेमा में जिन त्यौहारों को कभी खुशी गम प्रकट करने का माध्यम बनाया जाता है, उसमें दिवाली भी उल्लेखनीय है। किंतु, कुछ समय से परदे से दिवाली का उजास कम हो गया। दिवाली के दृश्यों और गानों से बॉलीवुड ने किनारा कर लिया। विषयवस्तु में भी अब काफी बदलाव आ गया है। दीपों के पर्व दिवाली पर प्रदर्शित फिल्मों की सफलता लगभग सुनिश्चित रहती थी। लेकिन, हाल के सालों में बड़े पर्दे पर इस त्यौहार को कम ही स्थान मिला। दूसरे त्योहारों के मुकाबले सिनेमा के परदे पर दिवाली के पटाखे कम ही फूटते हैं। ब्लैक एंड व्हाइट के ज़माने से परदे पर दिवाली का उजियारा छाता रहा। लेकिन, धीरे-धीरे परदे से दिवाली गायब होने लगी। फिल्मों का स्वरूप और दर्शकों का नजरिया बदलने से अब दिवाली के प्रसंगों को पहले की तरह शामिल नहीं किया जाने लगा! फिर भी साल, दो साल में एकाध फिल्म तो ऐसी आ ही जाती है, जिसमें दिवाली के दृश्य या गीत दिखाई या सुनाई पड़ते हैं। जबकि, गुज़रे जमाने की कई फिल्में दिवाली के आसपास ही घूमती रहती थी।

सिनेमा के परदे पर त्यौहारों का मनाया जाना, बिकाऊ पटकथा की मांग पर निर्भर हो गया! फिल्मकार नई शैली के साथ प्रयोग करके कुछ नया करना चाहते हैं। वे बॉलीवुड के वैश्विक पटल पर पहुंचने के साथ वैश्विक सिनेमा के प्रशंसकों को लुभाने वाले विषयों पर फिल्म बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं। हर त्यौहार का बॉलीवुड कनेक्शन होता है। हमारी परंपराओं, व्रत-त्यौहारों को गीतों या फिल्मों के कथानक में पिरोकर दिखाया जाता रहा है। होली तो बॉलीवुड का सदाबहार त्यौहार है, लेकिन दीवाली कभी परदे का पसंदीदा त्योहार नहीं बन पाया। दिवाली पर प्रदर्शित फिल्मों की सफलता लगभग सुनिश्चित मानी जाती है! किंतु, हाल के सालों में फिल्मों में ये त्यौहार लगभग भुला दिया गया। जयंत देसाई के निर्देशन में 1940 में आई 'दिवाली' इसी परम्परा की फिल्म थी! इसके बाद 1955 में गजानन जागीरदार की 'घर घर में दिवाली' और इसके सालभर बाद 1956 आई में दीपक आशा की 'दिवाली की रात' में भी दिवाली को विषय वस्तु बनाकर फिल्म बनाई गई थी।

इसके बाद फ़िल्मो में गाहे-बगाहे दिवाली के प्रसंगों को जोड़ा तो गया, लेकिन इस त्यौहार को केंद्र में रखकर फ़िल्में बनाना लगभग थम सा गया। जिन फिल्मों में दिवाली के दृश्यों को प्रमुखता से शामिल किया गया, उनमें 1961 में आई राज कपूर, वैजयंती माला की 'नजराना' थी! इस फिल्म में 'मेले है चिरागों के रंगीन दीवाली है' गीत लता मंगेशकर ने गाया था। यह ब्लैक एंड व्हाइट दौर की खुशनुमा दिवाली का गीत है। इस गीत की खासियत है कि शुरू से अंत तक इसमें दीवाली की आतिशबाजी और भरपूर रोशनी नजर आती है। यह गीत आज भी देखने पर जीवंत नजर आता है। 1962 में आई 'हरियाली और रास्ता' में भी दिवाली के दृश्यों में नायक, नायिका का विरह दर्शाया गया था। वैजयंती माला दिलीप कुमार की 'पैगाम' और 'लीडर' में दिवाली के जरिए फिल्म के किरदारों को जोड़ने का प्रयास किया था। 1972 में 'अनुराग' में भी आपसी भरोसे और विश्वास को दिवाली से जोड़कर दर्शाया था। इसमें कैंसर से जूझ रहे बच्चे की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए पूरा मोहल्ला दिवाली मनाने में जुट जाता है।

दिवाली के पटाखों के धमाकों के बीच गोलियों की आवाज दबाकर पूरे परिवार के खत्म करने का दृश्य अमिताभ को सितारा बनाने वाली फिल्म 'जंजीर' में प्रभावशाली ढंग से फिल्माया किया गया था। फिल्म का ये दृश्य नायक अमिताभ को सपनों में हमेशा दिखाई देता है। कमल हासन की 1998 में आई 'चाची 420' में कमल हसन की बेटी के दिवाली के दिन पटाखों से घायल होने का प्रभावशाली दृश्य था। आदित्य चोपड़ा की 'मोहब्बतें' (2000) में दिवाली काफी अहम् थी। करण जौहर की 2001 में आई मल्टी स्टारर सुपरहिट फिल्म 'कभी खुशी कभी गम' का टाइटल सांग असल में एक दीवाली गीत है। जिसमें जया बच्चन दिवाली की पूजा करते हुए यह गाती है! पारंपरिक वेशभूषा और दमकती रोशनी से इस गीत की पृष्ठभूमि में दिवाली का भरपूर उजास नजर आता है।

दिवाली को पृष्ठभूमि में रखते हुए तैयार किए कुछ गानों को भी अपार लोकप्रियता हासिल हुई। इन गीतों में 'नजराना' का गीत 'एक वो भी दीवाली थी' 'शिर्डी के साईं बाबा' का गीत 'दीपावली मनाई सुहानी' के अलावा 'खजांची' का आई दीवाली आई, कैसी खुशहाली लाई, 'पैगाम' का दिवाली गीत 'कैसे मनाएं हम लाला दिवाली' और कुछ साल पहले गोविंदा अभिनीत फिल्म 'आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया' का गाना 'आई है दिवाली, सुनो जी घरवाली' दिवाली को केंद्र में ही रखकर रचे गए गीतों में थे। एसडी बर्मन के संगीत से सजी फिल्म 'जुगनू' फिल्म का गीत 'छोटे नन्हे मुन्ने प्यारे प्यारे रे' अपने समय में बेहद लोकप्रिय हुआ था। इसके अलावा 'नमक हराम' का राजेश खन्ना और अमिताभ पर फिल्माया गीत 'दिये जलते हैं फूल खिलते हैं' अपने बेहतरीन फिल्मांकन के लिए दर्शकों को आज भी याद है।

फिल्मों में दिवाली को लेकर कुछ ऐसे यादगार सीन भी फिल्माए गए जो अप्रासंगिक होते हुए भी दर्शकों को हमेशा याद रहते हैं। संजय दत्त अभिनीत फिल्म 'वास्तव' (1999) अपने समय की हिट फिल्मों में से एक है। इसमें दिवाली का यादगार सीन है। फिल्म में गैंगस्टर संजय दत्त दिवाली के मौके पर अपने घर आते हैं! अपने गले में सोने की मोटी चेन, एक हाथ में पिस्टल और दूसरे में नोटों की गड्डी के साथ मां के सामने कहते हैं 'इसे 50 तोला बोलते हैं।' इसी तरह चेतन आनंद की 1965 में आई फिल्म 'हकीकत' में भी दिवाली का प्रसंग था। भारत और चीन के बीच 1962 में हुए युद्ध पर आधारित इस फिल्म के एक दृश्य में दिवाली के दिन फिल्म के अभिनेता जयंत देश के जवानों को एक संदेश भेजते हैं, जो बेहद मार्मिक होता है। 'हकीकत' में दिवाली पर दर्द भरा गीत भी फिल्माया गया, जिसके बोल थे 'आई अब के साल दीपावली, मुंह पर अपने खून मलें।' 1973 में आई फिल्म 'जुगनू' में दिवाली पर एक गीत है, जिसके बोल थे 'दीप दिवाली के झूठे, रात जले सुबह टूटे, छोटे-छोटे नन्हे-मुन्ने, प्यारे-प्यारे रे, अच्छे बच्चे जग उजियारे रे!' यह गीत धर्मेंद्र पर फिल्माया था, जिसमें वे यह बताने की कोशिश करते हैं कि दुनिया में असल उजास अच्छे बच्चों के कारण है। 2005 में रिलीज हुई फिल्म 'होम डिलेवरी' ज्यादा नहीं चली, लेकिन फिल्म का गीत 'मेरे तुम्हारे सबके लिए हैप्पी दिवाली' ने लोगों के बीच लोकप्रिय किया।

2007 में आयी फिल्म 'तारे जमीन पर' में आमिर खान के अलावा बाल कलाकार दर्शील सफारी ने जबरदस्त अभिनय किया था। इसमें दिखाया था कि दर्शील को बोर्डिंग स्कूल में परिवार की याद आती है। जबकि, उसके आसपास के लोग अपनी खुशी के लिए दिवाली मनाते हैं। फिल्म 'वास्तव' (1999) में भी दिवाली का यादगार सीन है। इसमें गैंगस्टर संजय दत्त दिवाली पर घर आता है। गले में सोने की मोटी चेन, हाथ में पिस्टल और दूसरे में नोटों की गड्डी मां के सामने बोलता हैं 'इसे 50 तोला बोलते हैं।' चेतन आनंद की फिल्म 'हकीकत' (1965) में भी दिवाली का उल्लेख है। भारत और चीन के बीच 1962 में हुए युद्ध के एक दृश्य में दिवाली के दिन अभिनेता जयंत देश के जवानों को एक बेहद मार्मिक संदेश भेजते हैं। 1973 की फिल्म 'जुगनू' में दिवाली पर एक गीत है, जिसके बोल थे 'दीप दिवाली के झूठे, रात जले सुबह टूटे, छोटे-छोटे नन्हे-मुन्ने, प्यारे-प्यारे रे, अच्छे बच्चे जग उजियारे रे!' यह गीत धर्मेंद्र पर फिल्माया था। 2005 में आई फिल्म 'होम डिलेवरी' का गीत 'मेरे तुम्हारे सबके लिए हैप्पी दिवाली' था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सात साल बाद मामा गोविंदा के घर पहुंचा भांजा

गोविंदा और उनके भांजे और कॉमेडियन कृष्णा अभिषेक के काफी समय से अनबन चल रही है। अब कृष्णा अभिषेक अपने मामा गोविंदा के घर 7 साल बाद पहुंचे हैं और उनसे मुलाकात की। गोविंदा को कुछ दिनों पहले पैर में गोली लग गई और वे घायल हो गए थे। कृष्णा अपने मामा का हालचाल लेने के लिए उनके घर पहुंचे। घर पर दोनों की मुलाकात सात साल बाद हुई। वहीं, कॉमेडियन ने अपनी मामी सुनीता आहूजा को लेकर भी कुछ बात कही। कृष्णा ने बताया था कि फैमिली ने अपने मनमुटाव को भुला दिया है और आगे बढ़ गए।

गोविंदा को इसी महीने असावधानी से पैर में गोली लग गई थी। इसके बाद उन्हें अस्पताल में

एडमिट करवाया गया था जहां कृष्णा की पत्नी कश्मीरा शाह उनसे मिलने पहुंची। लेकिन, कृष्णा नहीं जा पाए थे। क्योंकि, वे इंडिया में नहीं थे। उन्होंने अपने मामा के जल्द ठीक होने की दुआ करने की पोस्ट में बताया था कि वे देश से बाहर हैं। अब इंडिया आकर कृष्णा अपने मामा गोविंदा के घर पहुंचे और उनसे मुलाकात की।

कृष्णा ने कहा कि ऐसा लगा कि जैसे मैंने अपना आधा वनवास पूरा कर लिया हो। मामा की बेटी टीना से मिलना मेरे लिए काफी इमोशनल कर देने वाला पल था। मैंने बस उसे गले लगाया। मामा गोविंदा से मिलने का अनुभव शेयर करते हुए कृष्णा अभिषेक ने आगे बताया कि हम दोनों साथ बैठे और मजाक किया और पुराने दिनों को याद किया। हम लोगों ने अपने पुराने मतभेदों को सामने नहीं लाए। सब गिले-शिकवे दूर हो गए। मैं अपनी मामी सुनीता आहूजा से नहीं मिल पाया। क्योंकि, वे बिजी थी। मैं उनका सामना करने से डरता हूं, मुझे पता है कि वे मुझे डाटेंगी।

'रामायण' में रावण बनेंगे यश, खुद कंफर्म किया

महाकाव्य 'रामायण' पर बन रही फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी। यह फिल्म मूवी लगातार सुर्खियों में बनी हुई है। 'रामायण' में रणबीर कपूर प्रभु श्री राम का किरदार निभाएंगे तो साउथ की एक्ट्रेस साई पल्लवी सीता का रोल प्ले करेंगी। इस फिल्म को लेकर अटकलें लगाई जा रही थी कि 'रामायण' में केजीएफ स्टार यश 'रामायण' का रोल निभाएंगे। अब खुद एक्टर ने इन खबरों पर मुहर लगा दी। यश ने हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान बताया कि वह नितेश तिवारी की 'रामायण' में 'रावण' का रोल निभाएंगे। उन्होंने पहली बार फिल्म पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। एक्टर से जब 'रावण' का किरदार निभाने को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि यह बहुत ही दमदार किरदार है और ये रोल निभाना मेरे लिए एक बड़ी बात है।

इंटरव्यू के दौरान रावण के चरित्र पर भी बातचीत की। उन्होंने कहा कि महाकाव्य रामायण का यह किरदार बहुत ही आकर्षक है। रावण का रोल निभाना मेरे लिए बिल्कुल भी आसान नहीं था, यह काफी मुश्किल रहा। इस रोल को निभाना मेरे लिए जितना चैलेंजिंग है, उतना ही इसे करने के लिए मैं एक्साइटेड हूं। उम्मीद करता हूं कि दर्शकों को यह पसंद आएगा फिल्म में हनुमान के रोल में एक्टर सनी देओल दिखेंगे, वहीं एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह 'सूपर्णखा' का रोल निभाएंगी। लारा दत्ता कैकेयी बनेंगी और एक्टर रवि दुबे 'लक्ष्मण' का रोल निभाएंगे। यह फिल्म अगले साल यानी 2025 में बॉक्स ऑफिस पर दस्तक देगी।

फिल्मी दुनिया की ताश वाली दीवाली

अशोक जोशी

दीवाली बस दहलीज पर ही है। अच्छे मानसून तथा बेहतर आर्थिक स्थिति के चलते इस बार पूरे देश में दीवाली का उत्साह जोरों पर है। यह त्यौहार मनाया जाता है राम के अयोध्या वापस आने पर। बुराई पर अच्छे की

जीत स्थापित करने के बाद राम अयोध्या लौट कर अपने परिवार से एक बार फिर मिले थे। उस साल दुनिया की पहली दीवाली मनाई गई थी। समय के साथ इस त्यौहार को मनाने के स्वरूप में बदलाव आया!

पटाखों, मिठाइयों और पटाखों के अलावा एक और प्रथा जो दीवाली से जुड़ी है वो है जुआ खेलने की प्रथा। इसके पीछे की अध्यात्मिक कथा शिव और पार्वती से जुड़ी है। कहा जाता है कि इस रात पूरे ब्रह्माण्ड के तारों और ग्रहों में बदलाव आता है। यह बदलाव शिव और पार्वती के बीच चल रहे पासे के खेल का ही प्रभाव होता है। सिनेमा भी जुए के प्रभाव से अछूता नहीं रह गया है। जिस तरह से दीवाली पर देशभर में जुआ खेला जाता है , उसी तरह दुनियाभर की फिल्मों में जुए से जुड़े दृश्य दिखाई दे जाते है।

जहां तक जुए शीर्षक से जुड़ी फिल्मों की बात है तो हमारे यहां जुआरी शीर्षक से ही दो फिल्में बन चुकी है। पहली फिल्म 1968 में आयी थी। सूरज प्रकाश निर्देशित इस फिल्म के नायक थे शशि कपूर। उनके साथ तनुजा, नंदा, मदन पुरी, और रहमान ने इस फिल्म में काम किया था। फिल्म का नायक शशि कपूर पहले तो शराबी है ऊपर से जुआरी है जो दूसरों की खुशी के लिए और जरूरतमंदों की मदद के लिए जुआ खेलता है। कल्याण जी आनंद जी के संगीत से सजी यह फिल्म औसत साबित हुई थी।

1994 में धर्मेंद्र, अरमान कोहली, शिल्पा शिरोडकर, महमूद, किरण कुमार ,रजा मुराद और परेश रावल अभिनीत 'जुआरी' प्रदर्शित हुई थी जिसका निर्देशन जगदीश ए शर्मा ने किया था और संगीत दिया था बप्पी लहरी ने। इस फिल्म में धर्मेंद्र जुआरी होते हैं, जो बड़े ही अजीब काम के लिए जुआ खेलता है। उसकी प्रेमिका खलनायक के शिकंजे में है और उसकी शर्त है कि यदि अपनी प्रेमिका को छुड़ाना है तो नायक को जुआ खेलना पड़ेगा। यह फिल्म कोई खास असर नहीं छोड पायी थी।

फिल्म निर्माण भी एक तरह से जुआ ही है। इसमे कभी दाव लग जाता है तो कभी दांव उल्टा पड़ जाता है। प्रकाश मेहरा के लिए फिल्म निर्माण वैसे तो फायदे का सौदा ही रहा है। लेकिन जब उन्होंने जिंदगी एक जुआ का निर्माण किया तो सारे पासे पलट गए और दांव उल्टा पड़ गया । अनिल कपूर, माधुरी दीक्षित, सुरेश ओबेरॉय, शक्ति कपूर, अनुपम खेर और अमरीश पुरी जैसे सितारों और बप्पी लहरी का संगीत भी इसे डूबने से नहीं बचा पाया।

यदि श्वेत और श्याम फिल्मों के दौर में जुए पर आधारित फिल्मों की बात की जाए तो देव आनंद ऐसे सितारे हैं जिन्होने उस दौर की अपनी हर दूसरी फिल्म में पत्ते फेंकते हुए मुंह में सिगरेट लगाकर जुए को पर्दे पर उतारकर सफलता पर सफलता हासिल की है। उनकी निर्माण संस्था की पहली फिल्म बाजी जिसकी कहानी बलराज साहनी ने लिखी थी और निर्देशन गुरुदत्त ने किया था वह भी ऐसे ही पत्ते बाज की कहानी है जिसके हाथों में जादू है। उसे अपने हाथां पर इतना भरोसा है कि वह किसी भी तरह से पत्ते बांटे दाव उसका ही बैठता है। तभी तो गीता बाली उससे गुहार करती

है अपने पे भरोसा है तो एक दाव लगा ले। यह फिल्म सुपरहिट थी। इसके बाद देव आनंद ज्यादातर फिल्मों में जुआरी ही दिखाई देते थे।

जुआरी का चोगा उतार कर लम्बे समय तक रोमांटिक भूमिकाएं निभाने के बाद 1971 में देव आनंद ने एक बार फिर अपने हाथों में ताश की गड्डी थामी फिल्म थी गैम्बलर। फिल्म में देव को उनकी मां ने बचपन में ही त्याग दिया था. इस बच्चे की परवरिश एक क्रिमिनल ने की थी और इसलिए यह बच्चा पत्तों के खेल में माहिर हो गया। इस फिल्म में देव आनंद के साथ जहीदा थीं। गैम्बलर में नीरज के गीत और सचिन देव बर्मन का संगीत था जो बहुत लोकप्रिय हुआ। इसमें शत्रुघ्न सिन्हा एक अलग अंदाज में दिखाई दिए।

सिनेमा जुए ने पर्दे पर भोली भाली इमेज वाले राज कपूर को भी अपने आगोश में लेने से गुरेज नहीं किया । श्री 420 में जब काली कमाई कर राज मालामाल हो जाता है तो नादिरा उसे अपने मायाजाल में फंसाकर पत्तों की दुनिया में ले जाती है। लेकिन फिल्म समाप्त होते होते वह फिर से अपनी प्रेमिका नरगिस के पास लौट कर कह ही देते हें मैने दिल तुझको दिया! याद नहीं आता कि हिन्दी सिनेमा की त्रिमूर्ति के तीसरे नायक दिलीप कुमार ने किसी फिल्म में जुआरी की भूमिका निभाई हो। लेकिन कम ही लोगों को जानकारी होगी कि असल जिंदगी में दिलीप कुमार पत्ते लगाने में उस्ताद थे। जब उनके हाथों में ताश की गड्डी होती थी तो वह पत्ते फेंटकर बांटते हुए यह जान जाते थे कि टेबल पर बैठे किस व्यक्ति के पास कौन से पत्ते गए हैं।

इस सदी के महानायक का तमगा लगाए बैठे अमिताभ ने भी पर्दे पर जुए को अपनाया। 1979 में शक्ति सामंत के

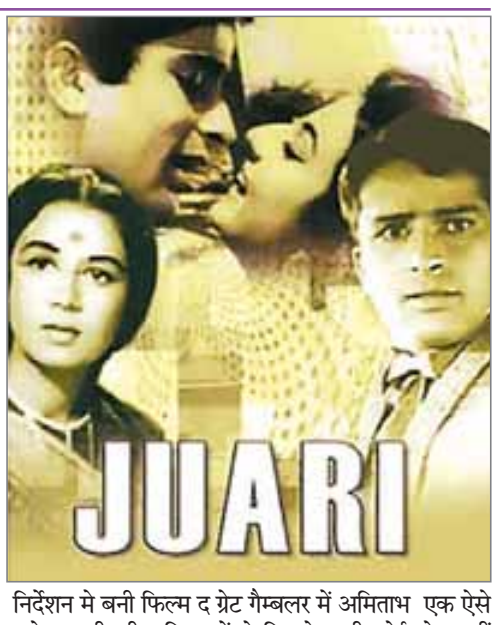

निर्देशन मे बनी फिल्म द ग्रेट गैम्बलर में अमिताभ एक ऐसे बड़े जुआरी की भूमिका में थे जिसने कभी कोई खेल नहीं हारा था। ग्रेट गैम्बलर एक एक्शन थ्रिलर थी जिसमें अमिताभ दोहरी भूमिका में थे और एक अमिताभ की बाहों में जीनत अमान थी तो दूसरे की बाहों में नीतू सिंह। यह फिल्म अपनी विदेशी लोकेशंस और गीतों के कारण चर्चित हुई थी ।

बॉलीवुड ही नहीं हॉलीवुड में भी आपराधिक पृष्ठभूमि वाली फिल्मों में जुए के दृश्य आम होते है। जेम्स बाण्ड की फिल्मों में इस तरह के दृश्य आम होते है। कैसिनो रॉयल ऐसी ही फिल्म थी । वहां कैसीनो नाम से दो बार फिल्में बन चुकी है। इसके अलावा 2014 में दि गैम्बलर भी ऐसी ही फिल्म थी जिसमें एक जुए के आदी एक प्रोफेसर की कहानी को बड़े रोचक अंदाज में फिल्माया गया था। हमारे समाज में दीवाली के दिन पत्ते खेलना एक परंपरा का हिस्सा माना गया है। कई घरों में दीवाली के दिन जुआ खेलना बुरा नहीं माना जाता है । इन परिवारों में इसे रस्मी तौर पर खेला जाता है लेकिन बॉलीवुड में दीवाली की रात जो जुआ खेला जाता है उसमें कई सितारे लाखों करोडों का दाव लगाने के लिए मशहूर हो चुके हैं जो इस साल भी बडा दाव लगाने की तैयारियां में जुट गए हैं।

उस अनजान इंदौरी की तलाश में...!

प्रकाश पुरोहित

पेरिस हवाई अड्डे पर वापसी की फ्लाइट के लिए जब दोस्त ने मुझे छोड़ा तो गमगीन था कि कुछ रोज ही सही, इस शहर में बहुत कुछ देखा है। कुछ छूट गया है, ज्यादा है, जो मेरे साथ चला आया है। घर पहुंचने की खुशी भी थी और पीछे छूट जाने का दर्द भी। यूं ही अपने खयालों में बैग घसीटता चला जा रहा था गेट नंबर 41-ए की तरफ। तभी बीच में एक जगह, दो जोड़ी नजरें मिलीं, मुस्कराती हुईं, कुछ अपनी-सी! मेरे भी चेहरे पर मुस्कान ने जगह बना ली। इस आदान- प्रदान ने आगे का रन-वे तैयार कर दिया। ठीक उनके सामने रुक गया। ये पति-पत्नी एक जैसी मुद्रा में मुस्करा रहे थे। यही कोई साठ के पेटे में रहे होंगे दोनों। कनपटी से सफेद बाल उम्र की खबर दे रहे थे, तभी पति ने हाथ आगे बढ़ाया और मैंने हाथ थाम लिया।

'कहां जा रहे हैं, इंडिया?' मेरे चेहरे पर भारत उसी तरह से छपा था, जैसे उनके चेहरे पर इंडिया नजर आ रहा था।

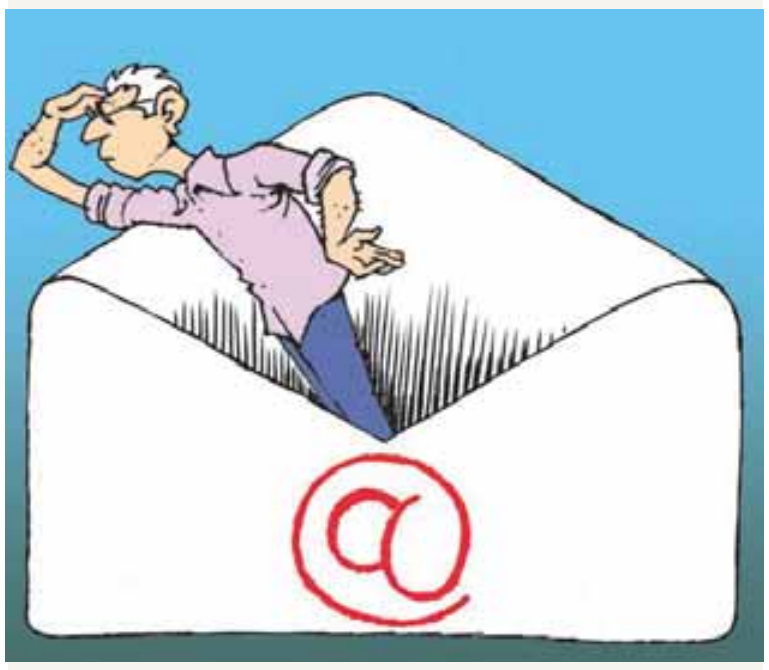

'हां, भारत ही जा रहा हूं।'

'भारत में कहां, मुंबई?' पूछा मुझ से।

'जी नहीं, इंदौर...।' यह सुनते ही पति महोदय खड़े हो गए और अपनी सीट मुझे देते हुए बोले 'तो लीजिये अब आप इंदौर वाले बातें करें, ये उमा भी इंदौर की ही हैं और मुझे पता है कि जब दो इंदौर वाले मिलते हैं तो फिर किसी चंडीगढ़ वाले की गुंजाइश नहीं बनती है, इसलिए मैं जरा घूम आता हूं।' यह सब इतनी तेजी और फुर्ती से हुआ कि मैं कुछ समझ सकूं या कुछ कह सकूं, उसके पहले ही पति महोदय ये जा, वो जा!

अब उमा सामने थीं और पूरा इंदौर हमारे सामने खुला पड़ा था। उमा ने बताया कि इंदौर में ही पूरी पढ़ाई की। सेंट रेफियल्स से स्कूल और फिर ओल्ड जीडीसी से ग्रेजुएशन। यानी बातचीत के लिए विषय की तो कोई कमी होना नहीं थी। कई बातें थीं, जो कॉमन थीं, जैसे स्कूल के बाहर बम की कचोरी, जो हमारे समय में क्रिश्चियन कॉलेज के बाहर गेट पर मिलती थी, दस पैसे की एक चटनी सहित। उमा के स्कूल में 'बम' सुनते ही हलचल मच जाती थी! फिर तो सराफा और छप्पन दुकान और नागौरी से अग्रवाल स्वीट्स तक के स्वाद हमारी जुबान को तर कर रहे थे।

इसी दौरान यह भी पता चला कि उमा का परिवार कभी साउथ से इंदौर आया था। पिता ने सिका स्कूल की विजय नगर में शुरुआत की थी और उमा की मां कर्नाटक संगीत की गायक थीं। उस दौर के संगी-साथियों का भी जिक्र होता रहा और यह भी कि देखते ही देखते इंदौर क्या से क्या हो गया। पहले हर जगह पहचान के चेहरे मिल जाते थे और अब ये आलम है कि खुद ही इस शहर में अजनबी लगते हैं।

उमा ने यह भी बताया कि उनकी बिटिया यहीं पेरिस में बस गई है, परिवार के साथ और ये दंपत्ति दो माह से यहीं थे। यह भी बताया कि ये जो हवाई अड्डा आप देख रहे हैं ना, दो महीने पहले बुरे हाल में था। आज तो एकदम बदला हुआ लग रहा है। जब हम यहां आये थे तो जगह-जगह तोड़फोड़ चल रही थी। हमें दो घंटे लग गए थे, यहां से बाहर निकलने में। ओलिंपिक की वजह से यहां के लोग नाराज हैं कि महंगाई और बढ़ जाएगी। कह सकते हैं कि इससे बेहतर तो हमारे इंदौर का हवाई अड्डा है। उन दिनों कॉलेज और स्कूल में क्या होता था, हम अपने-अपने अनुभव साझा कर रहे थे, बल्कि कहें खोद-खोद कर निकाल रहे थे। तब 'नईदुनिया' की क्या धाक थी और वीना नागपाल की 'घर की दुनिया' में अपनी बात सामूहिक पढ़ी-सुनी जाती थी। यह भी कि उनकी लड़की दिव्या हमारे स्कूल में सीनियर थीं। हमारे लिए उन्हें भी देखना कोई कम रोमांचक नहीं होता था!

इस बीच पति महोदय भी घूम-भटक कर आ गए और हमारे पास ही बैठ गए। उनके चेहरे की मुस्कराहट बता रही थी कि उन्हें कितना मजा आ रहा है। इंदौर की बातें कभी खत्म नहीं होती हैं, अगर दो इंदौरी मिल जाएं।

'वैसे आप मुंबई रुकेंगे या सीधे इंदौर जाएंगे?' उमा ने मुझ से पूछा।

'मेरी फ्लाइट तो दिल्ली की है और वहीं से सीधे इंदौर। हां, मुंबई होता तो शायद रुक भी जाता, दिल्ली तो मुझे डराती है। कई दोस्त हैं वहां, लेकिन दिल्ली जाना टालता ही रहता हूं। सरकारी शहर है, मुंबई की तो बात ही अलग है, कुछ नहीं तो पृथ्वी में शाम को नाटक तो देख ही सकते हैं और दिन में जहांगीर आर्ट गैलरी जिंदाबाद।' मैं अपनी रौ में बोलता जा रहा था।

'तो आप विस्तारा से जा रहे हैं?'

'नहीं, मेरा टिकट तो एयर इंडिया का है।'

'लेकिन गेट तो विस्तारा का है, आपका गेट नंबर क्या है?'

'41-ए।' मैंने बताया।

'और फ्लाइट कितनी बजे की है?'

'साढ़े आठ।'

'तो फिर आप यहां क्या कर रहे हैं, यह तो विस्तारा का गेट नंबर 34 है और अब तो आठ बज रहे हैं।' उमा के पति ने घड़ी देखते और कुछ घबराते हुए बताया।

मत पूछिए, हाथ-पैर ठंडे हो गए, लगा शरीर से जान ही निकल गई। मान लिया कि यह फ्लाइट तो गई। दौड़ते हुए जब गेट 41-ए पहुंचा तो सन्नाटा था। काउंटर पर भी कोई नहीं था। अब रिक्वेस्ट भी करें तो किससे! थक कर वहीं कुर्सी पर बैठ गया। तभी पास वाले को फोन पर बात करते सुना 'हां, दिल्ली की फ्लाइट एक घंटा डिले हो गई है। अब तुम दिल्ली मत आना, क्योंकि टाइम नहीं मिलेगा, कनेक्टिंग फ्लाइट है चेन्नई की।'

फिर भी अपनी खात्री के लिए पूछ लिया 'एयर इंडिया की दिल्ली फ्लाइट 8.25 वाली डिले हो गई क्या?' उसने पहले तो अजीब नजरों से घूरा और फिर सामने लगे डिस्प्ले बोर्ड की तरफ इशारा किया। हां, सच में डिले हो गई थी। वरदान ऐसे भी मिलते हैं कभी-कभी।

फ्लाइट मिल जाने की खुशी तो थी, लेकिन उमा से सिवाय नाम के कुछ मालुम नहीं कर सका। फ्लाइट छूट जाने का ऐसा डर बैठ गया था कि वापस जाकर उनसें सलीके से विदा भी नहीं ले सका। यह भी नहीं बता पाया कि मेरी फ्लाइट उनकी वजह से मिस नहीं हुई है। जब मैं भाग रहा था तो दोनों के चेहरे पर अपराध भाव देख रहा था कि हमारी वजह से छूट गई!

अब चाहता हूं कि उन्हें बता सकूं कि परेशान ना हों, फ्लाइट डिले हो गई थी, लेकिन सिवाय उमा के मेरे पास कोई नाम या पता नहीं है। यदि इतने भर से कोई इंदौरी, उमा को पहचानता हो या कुछ भी याद हो तो मुझे मेरे ई-मेल एड्रेस पर जरूर बता दें, आभारी रहूंगा!

क्या हम अब जल्दी ऊब रहे हैं?

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

मैं इस लाइन से बात शुरू नहीं करूंगी कि, ''हमारे जमाने में ऐसा होता था आजकल ऐसा होता है'' पर मैंने देखा है, अतीत को, भविष्य, वर्तमान से जोड़कर हम परिवर्तन और ग्रोथ देखते हैं। मसलन, पहले हमारे घर में सोफा, मिक्सी, टीवी, स्कूटर, साइकिल वगैरह भौतिक वस्तुएं घर के मालिक के होने तक चलती थीं। युवा को इंतजार करना पड़ता था कि कब हमारे बुजुर्ग स्वर्ग सिधारे और वो गृह परिवर्तन करें। यही बात रिश्तों में जिंदगी में होती थी। सब ना चाहते हुए भी साथ रहते थे। बुजुर्गों के जाते ही सब अलग हो जाते थे। अभी भी हमारी पीढ़ी के लोग तो इस परंपरा का वहन कर रहे हैं पर हम चीजों और रिश्तों से ऊबते नहीं थे, हालांकि आज़ादी किसे प्यारी नहीं होती। भुन भुन कर जिंदगी गुज़ारी फिर जब आज़ाद हुए जिम्मेदारियों और पुरानी वस्तुओं से तो इस आज़ाद, मुक्त जिंदगी का स्वाद ना ले पाए। जोड़ों के दर्द, डायबिटीज, बी.पी. जो हो गया। इस कारण युवा पीढ़ी थोड़ा हम से ज्यादा ऊब रही है। उनके पास कम उम्र में पैसा है। जिस कार का खूवाब आप जीवन भर देखते रहे, वो जवानी में ही उनके पास है। जिस बगीचे वाले मकान का अरमान जीवन भर पाल उसमें बैठकर चाय या वाइन की चुस्की लेने की सोची थी उसकी उम्र बीत गयी। हर मौसम में अब तो ठंड लगती है। युवा पीढ़ी पैसे हाथ आते ही मार्केट की सबसे लक्ज़री चीज खरीदना चाहती है। उनके पास खुद का मकान है। वे हवाई जहाज में घूमते हैं। हमने तो अब उम्र की थकान देख हवाई जहाज का टिकट लेना शुरू किया है। आपको कोई चार धाम नहीं करायेगा। आपका शरीर साथ दे तो हेलीकॉप्टर से चले जायें। युवा पीढ़ी वक्त की कमी का रोना रोती है और स्टेटस के लिए हांफती सी पूरा विश्व घूम रही है आनंद के लिए नहीं। एक जॉब छोड़ दूसरा ले रही है।

चलो, उनका जमाना अलग है तेज़ी, रफ्तार, ए.आई. का जमाना है तो क्या उनकी लाइफ स्टाइल से हमारी पीढ़ी ईर्ष्या कर रही है? बेशक। हालांकि हमने जवानी में कभी शुगर, बी.पी. का सामना नहीं किया बुजुर्गों के लिए जिनके बच्चे जिम्मेदारी, मकान में जगह की कमी का बहाना करते हैं नशा करने वाले युवाओं के लिये असायलम, नशा मुक्ति केंद्र, योग ध्यान केंद्र है। क्यों इतनी जल्दी चीजों से ऊब रहे हैं? कम उम्र में पैसा जो आ गया है। सारी चीजें खरीद लीं रिश्तों से मुक्त। कोई जिम्मेदारी भी नहीं है। अबबात करती हूँ जाती दुनिया की। हमारी उस दुनिया में दादा-दादी, नाना नानी, गर्मी की छुट्टी में नानी के घर जाना, बुआ, चाचा, मामा, मौसी की शादी खूब रिश्तेदारों का आना जाना होता था तो एकरसता भंग हो जाती थी। आज की पीढ़ी को मेहमान पसंद नहीं। प्रायवेसी खत्म हो जायेगी और वक्त भी नहीं है। मैं और मेरी बहन आजकल उन खुशनुमां दोपहर की याद करते हैं, जहाँ एक बड़े टब में पके आम भरकर ठंडे होने के लिये रखे जाते थे। लालच के मारे हम हाथ नहीं लगा सकते थे एक तो गिन कर मिलते थे। दूसरे माँ का कोई जासूस नज़र रखे होता था। आज उनके पास दो फ्रिज है जो फलों से भरा पड़ा है, खाने की फुरसत नहीं है। किराना भी बहुत है, पर ऊबी थकी पीढ़ी को ना खाना बनाना अच्छा लगता है ना फल खाने का समय मिलता है। बीच में जिम, योग जैसी चीजे ज्वाइन की जाती है, फिर थोड़े दिन बाद ''चीट डे'' के बहाने से जॉमैटो, स्विगी की दुकान चल पड़ती है।

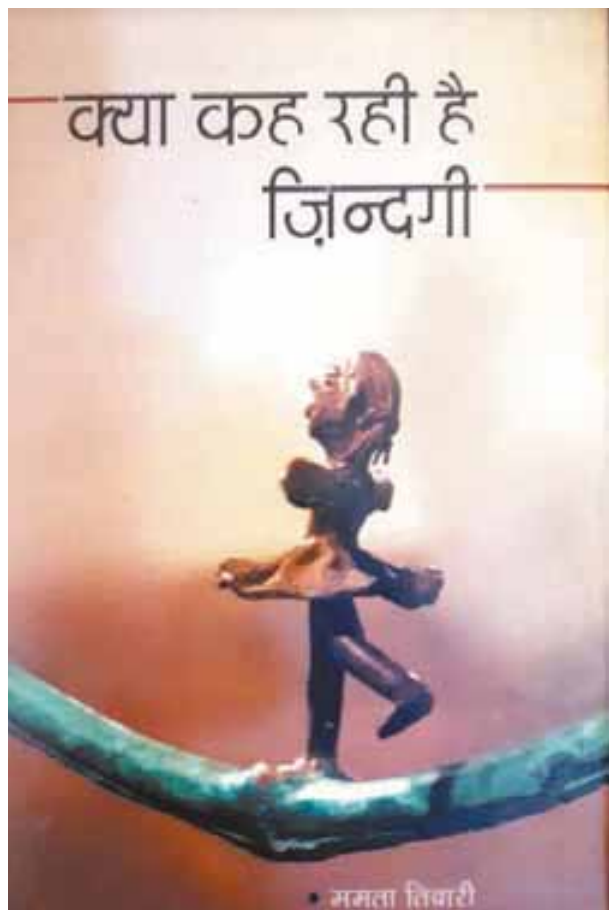

रिश्तों में अगर प्रेमी-प्रेमिका है तो समाज से नहीं डरते खुल के स्वीकारते हैं दूसरे की ज़्यादा बड़ी पॉकेट देख ऊबी प्रेमिका ब्रेकअप (सब कुछ ठीक नहीं है हमारे बीच मूव ऑनकर ले) कर उसी के दोस्त की गर्लफ्रेंड हो जाती है। अगर शादी हो जाती है तो कुछ समय बाद मोनोटोनस लाइफ से ऊब कर तलाक तक बात पहुंचती है लड़ाई झगड़े, काउंसलिंग सब होती है। अगर मन में घर का थोड़ा आदर होता है तो बात तय होती है कि शायद बच्चा आने से हालात सुधर जाये। बच्चा आने तक बेबी, शोना, जानू खूब आनंद लेते हैं। हर महीने बच्चे के लिए केक मंगाते हैं। बर्थ डे मनाया जाता है। फोटोग्राफी होती है। बच्चा होने के बाद की असली तकलीफों में एक दूसरे पर जिम्मेदारी ना संभालने का आरोप लगता है। लड़का विवाहेत्तर संबंध बनाता है। शांति के लिये लड़की भी बाहर जाकर पुनः नौकरी चाहती है।

''मैं ही अकेली क्यों बच्चा संभालू। तुम्हारा भी है।'' पैसा खूब है तो बेबी को नैनी और जिन मां-बापसे आप अलग हुये उन्हें नैनी पे नजर रखने को बुलाया जाता है। उनमें भी प्रायवेसी भंग हो जाती है। तुम्हारे मेरे, मां-बाप पर तू-तू मैं-मैं हो जाती है। कोई वर्क फ्रॉम होम नहीं चाहता। बाहर निकलने या टूर पर जाने से दिल खुश हो जाते हैं। बोरियत दूर करने के लिए पार्टियां होती है। जिसमें कैटरिंग, बाहर से खाना, ड्रिंक्स, नए ब्रांड के कपड़े की तैयारी होती है। मर्द दारू पर औरतें हाउस हेल्प पर बातें करती हैं।

अब जिनकी शादी उनके दोस्तों से बाद में होने वाली है। उनके पास प्रेमिका है दोनों शादी भी करना चाहते हैं पर दोस्तों की हालत देख डर जाते हैं। दोस्त अपने दोस्त से, लड़की अपनी सहेली से शादी की परेशानी गिनाते हैं तो वह कंफ्यूज हो जाते हैं। कई बार मां-बाप बीच में आकर समझाते हैं, देखो, मैं और तुम्हारे पापा 40 साल से एक दूसरे के साथ है। हमारी ना लड़ाई होती है ना हमने शिकायत की। (दोनों सोचते हैं जब हम छोटे थे तब कितना लड़ते थे दोनों पर कमरे से बाहर आते ही एक हो जाते थे। माँ को बुजुर्गों के सामने पिता का कहना मानना ही था फिर काहे की लड़ाई) पर आप निर्णय उन पर छोड़ वापस अपने शहर लौट जाते हैं। उनके रिश्तों में थोड़ी ऊब पैदा होती है, तो सोचते हैं। हम इक दूजे को वक्त नहीं दे पा रहे तो एक ही अपार्टमेंट में शिफ्ट हो जाते हैं। मां-बाप चैन की सांस लेते हैं। शुक्र है हमारे शहर में बच्चे ''लिव इन'' में नहीं रह रहे वरना समाज क्या कहेगा?

परिवर्तन के बार-बार होते प्रहार, और ऊब के कारण कहीं ''लिव इन'' भी ना चल पाई तो अब बच्चे पालने की जिम्मेदारी उठाने से बचते, कॅरियर पर फोकस, करते कपल सोचते हैं बाप रे, हम से ना हो पायेगा। या मां-बाप के भरोसे बच्चे पैदा करते हैं और उन्हें थमा कर कहते हैं आपको ही पोते-पोती का शौक था सो संभालो।

मैं सलाह लेने वालों के बारे में सोचती हूँ। मेरी डॉक्टर दोस्त कहती है, समय रहते बच्चे कर लेना चाहिये बाद में शरीर साथ नहीं देगा (आजकल तो समय की कमी के चलते स्पर्म और अंडाणु सुरक्षित रखने की सुविधा भी है)। कई बूढ़े कपल छोटे बच्चे लिये घूमते हैं मानो बच्चे आपके खालीपन को भरने के लिए है। इतनी सारी ऊब देखकर कोई शादी नहीं करना चाह रहा, कोई बच्चे पैदा नहीं करना चाह रहा। हमने चीजों, रिश्तों को खिलौने की तरह कर लिया। एक से ऊबे दूसरा ले लिया, पर याद रखिये जिंदगी सबको दूसरा मौका नहीं देती। थोड़े सब्र से आनंद को ढूंढिये नहीं तो कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा। ना दोस्त, ना लक्जरी, ना रिश्तेदार। जिंदगी की एकरसता को भंग करना जरूरी है तो ब्रेक लेकर वो काम कर लें जो आपको खुशी देता हो। आंख बंद कर सोचिये सब तरफ से थक हार अपने पुराने घर में, मां की गोद में और बचपन की यादों में लौटना कितना अच्छा लगता है। अपने गाँव, घर, परिवार को सिर्फ ऊब और बोझ ना समझिये अंत में वही सुकून देता है। और बीच-बीच में पूछते रहिये ज़िंदगी से कि वो क्या कह रही है।

ख़फ़ा ख़फ़ा से क्यों हो आजकल खुद से
जी क्यों नहीं बहलता तुम्हारा किसी शय से
जी रहे हो गोया सांसें चल रही हैं
चल रहे हो गोया जिंदा हो तुम
तुम्हें कोई इंसा अच्छा नहीं लगता
सुबह की धूप, नीला आसमाँ, तुम्हारे
दिल को रौशन नहीं करता
चाँद, सितारों के झुरमुट से भी
तुम्हें ठंडक पड़ती नहीं
किसी खूबसूरत चीज पर तुम्हारी
नज़र ठहरती नहीं।

त्यौहार सबकी आशा का केंद्र

हर साल चाची जी दीपावली पर दस्तक देती है घर-घर

गांव-कस्बों में एक मुस्लिम जाति रचा बसी है वो है पिंजारा, मंसुरी जो रजाई गादी तकिये में रूई भरने काम तो करती है। साथ ही हर साल दीपावली के आठ दस दिन पूर्व घर-घर जाकर दीपक के लिये रूई देती, जिसकी बाती प्रकाशित हो उजाला करें। 5 रुपये की इकाई में मतलब 5,10,15,20.... रुई अनुमान देती है। शहरों में यह सुख कहां? बस, एक दो दिन में कुम्हार गधे पर दीपक कलश लाद कर दीपावली को प्रकाशित करता है। त्यौहार सबकी आशा का केंद्र है। जाति धर्म से कोई वास्ता नहीं।

फोटो और विवरण- बंसीलाल परमार

प्यार बिकता नहीं...!

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

अगर आपको सीरियल किलर, घोटालेबाज, पंथ, धोखेबाज डॉक्टर, तकनीकी धोखेबाज, नकली करोड़पति, टाइगर किंग्स और फायरफेस्ट जैसी नाकाबिले यकीन वाली गड़बड़ी के बारे में जानना पसंद है तो नेटफ्लिक्स पर कई डॉक्यूमेंट्री है। परेशानी यह है कि सभी अच्छी नहीं हैं। अच्छी कहानी, अच्छी डॉक्यूमेंट्री के बराबर नहीं होती। ऐसा ही मामला 'स्वीट बॉबी : माई कैटफिश नाइटमेयर' के साथ है।

कीरत अस्सी को बॉबी जंडू फेसबुक पर मिला तो उसके पास इसे शक की नजर से देखने का कोई कारण नहीं था। हर कोई फेसबुक पर था। बॉबी का परिवार केन्याई पंजाबी सिख में जाना-माना था और दोनों के कई साझा ऑनलाइन मित्र थे। बॉबी का छोटा भाई, जेजे, कीरत की छोटी चचेरी बहन सिमरन को डेट कर रहा था। हालांकि कीरत और बॉबी कभी नहीं मिले थे। बॉबी, कार्डियोलॉजी सहायक, यूके और केन्या के बीच घूमता रहता था और कीरत, मार्केटिंग पेशेवर लंदन में रहती थी। लगभग दस बरस में यह दोस्ती आभासी रोमांस, सगाई और अधूरे वादों के ऐसे जाल में बदल गई, जिसने कीरत की जिंदगी के दस बरस को खा लिया। यह फिल्म कीरत के अनुभव का ब्यौरा है। वह बताती है कि कैसे वह 'बॉबी' के साथ-साथ उसके दोस्तों और परिवार के साथ फेसबुक मैसेंजर, वाट्सएप, फोन कॉल और स्काइप से और भी करीब आती गई।

शुक्र है कि कई एपिसोड नहीं बनाए, बयासी मिनट की स्वीट बॉबी सच्ची अपराध डॉक्यूमेंट्री है, जिसे और लंबा किया जा सकता था। बड़ा खुलासा तेजी से होता है और समाधान मुश्किल से ही सामने आता है। फिल्म इस नोट के साथ समाप्त होती है कि किरात का कैटफिशर के खिलाफ

लाया सिविल केस 2022 में अदालत के बाहर सुलझा लिया गया था। स्वीट बॉबी चौंका तो देती है, लेकिन कई सवाल छोड़ जाती है। आखिर ऐसा कैसे हो सकता है कि दस बरस तक बिना चेहरा देखे, बिना मिले रिश्ते में इस कदर उलझती चली गई। आखिर कीरत के परिवार में किसी ने भी बॉबी की सच्चाई जानने और उसके परिवार से मिलने की कोशिश क्यों नहीं की?

कैटफिशिंग और डिजिटल धोखाधड़ी मामले में कानूनी सुधार के लिए फिल्म आधे-अधूरे मन से बात करती है। स्वीट बॉबी जवाब के बजाय ज्यादा सवाल करती है।

हालांकि कई कैटफिशिंग घोटालों के साथ मुश्किल ही यही है कि कभी-कभी कोई जवाब नहीं होता है।